قرآن مجید

लफ़्ज़ी तरजुमा

وَاعلَمُوٓا

पारा - 10

eParah

وَاعْلَمُوْٓا	اَنَّمَا	غَنِمْتُمْ	مِّنْ شَيْءٍ	فَاَنَّ	لِلّٰهِ	خُمُسَهٗ
और जान लो	कि बेशक जो	ग़नीमत में पाओ तुम	कोई भी चीज़	तो बेशक	अल्लाह के लिए है	पांचवां हिस्सा उसका

وَلِلرَّسُوْلِ	وَلِذِي الْقُرْبٰى	وَالْيَتٰمٰى	وَالْمَسٰكِيْنِ	وَابْنِ السَّبِيْلِ ۙ
और रसूल के लिए	और क़राबत दारों के लिए	और यतीमों	और मिस्कीनों	और मुसाफ़िर के लिए

اِنْ	كُنْتُمْ	اٰمَنْتُمْ	بِاللّٰهِ	وَمَآ	اَنْزَلْنَا	عَلٰى عَبْدِنَا	يَوْمَ الْفُرْقَانِ
अगर	हो तुम	ईमान लाए तुम	अल्लाह पर	और उस पर जो	नाज़िल किया हमने	अपने बंदे पर	फ़ैसले के दिन

يَوْمَ	الْتَقَى	الْجَمْعٰنِ ؕ	وَاللّٰهُ	عَلٰى	كُلِّ	شَيْءٍ	قَدِيْرٌ ﴿41﴾	اِذْ
जिस दिन	आमने सामने हुईं	दो जमाअतें	और अल्लाह	ऊपर	हर	चीज़ के	ख़ूब क़ुदरत रखने वाला है	जब

اَنْتُمْ	بِالْعُدْوَةِ	الدُّنْيَا	وَهُمْ	بِالْعُدْوَةِ	الْقُصْوٰى	وَالرَّكْبُ
तुम	किनारे पर थे	क़रीब के	और वो	किनारे पर थे	दूर के	और क़ाफ़िला

اَسْفَلَ	مِنْكُمْ ؕ	وَلَوْ	تَوَاعَدْتُّمْ	لَاخْتَلَفْتُمْ	فِي الْمِيْعٰدِ ۙ
नीचे था	तुमसे	और अगर	आपस में वादा करते तुम	अलबत्ता इख़्तिलाफ़ करते तुम	मुक़र्रर वक़्त/जगह के बारे में

وَلٰكِنْ	لِّيَقْضِيَ	اللّٰهُ	اَمْرًا	كَانَ	مَفْعُوْلًا ۙ	لِّيَهْلِكَ	مَنْ
और लेकिन	ताकि पूरा कर दे	अल्लाह	एक काम को	जो था	होकर रहने वाला	ताकि वो हलाक हो	जो

هَلَكَ	عَنْۢ بَيِّنَةٍ	وَّيَحْيٰى	مَنْ	حَيَّ	عَنْۢ بَيِّنَةٍ ؕ	وَاِنَّ
हलाक हो	साथ वाज़ेह दलील के	और वो ज़िंदा रहे	जो	ज़िंदा रहे	साथ वाज़ेह दलील के	और बेशक

اللّٰهَ	لَسَمِيْعٌ	عَلِيْمٌ ۙ﴿42﴾	اِذْ	يُرِيْكَهُمُ	اللّٰهُ	فِيْ مَنَامِكَ
अल्लाह	अलबत्ता ख़ूब सुनने वाला है	ख़ूब जानने वाला है	जब	दिखाया आपको उन्हें	अल्लाह ने	आपके ख़्वाब में

قَلِيْلًا ؕ	وَلَوْ	اَرٰىكَهُمْ	كَثِيْرًا	لَّفَشِلْتُمْ	وَلَتَنَازَعْتُمْ	فِي الْاَمْرِ
थोड़े	और अगर	वो दिखाता आपको उन्हें	ज़्यादा	अलबत्ता हिम्मत हार जाते तुम	और अलबत्ता बाहम झगड़ने लगते तुम	मामले में

وَلٰكِنَّ	اللّٰهَ	سَلَّمَ ؕ	اِنَّهٗ	عَلِيْمٌۢ	بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿43﴾	وَاِذْ
और लेकिन	अल्लाह ने	सलामत रखा	बेशक वो	ख़ूब जानने वाला है	सीनों वाले (भेद)	और जब

يُرِيْكَهُمُوْهُمْ	اِذِ	الْتَقَيْتُمْ	فِيْٓ اَعْيُنِكُمْ	قَلِيْلًا	وَّيُقَلِّلُكُمْ
वो दिखा रहा था तुम्हें उनको	जब	आमने-सामने हुए तुम	तुम्हारी निगाहों में	थोड़े	और वो थोड़ा दिखा रहा था तुम्हें

فِيْٓ اَعْيُنِهِمْ	لِيَقْضِيَ	اللّٰهُ	اَمْرًا	كَانَ	مَفْعُوْلًا ؕ	وَاِلَى اللّٰهِ
उनकी निगाहों में	ताकि पूरा कर दे	अल्लाह	काम	था जो	होकर रहने वाला	और तरफ़ अल्लाह ही के

ع 5 7 1

تُرْجَعُ	الْاُمُوْرُ ﴿44﴾ ع	يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ	اٰمَنُوْٓا	اِذَا	لَقِيْتُمْ	فِئَةً
लौटाए जाते हैं	सब काम	ऐ लोगो जो	ईमान लाए हो	जब	मुक़ाबला हो तुम्हारा	किसी गिरोह से

فَاثْبُتُوْا	وَاذْكُرُوا	اللّٰهَ	كَثِيْرًا	لَّعَلَّكُمْ	تُفْلِحُوْنَ ﴿45﴾ ج	وَاَطِيْعُوا	اللّٰهَ
तो साबित क़दम रहो	और याद करो	अल्लाह को	कसरत से	ताकि तुम	तुम फ़लाह पाओ	और इताअत करो	अल्लाह की

وَرَسُوْلَهٗ	وَلَا	تَنَازَعُوْا	فَتَفْشَلُوْا	وَتَذْهَبَ	رِيْحُكُمْ
और उसके रसूल की	और ना	तुम बाहम झगड़ो	वरना तुम कम हिम्मत हो जाओगे	और जाती रहेगी	हवा(शान) तुम्हारी

وَاصْبِرُوْا ؕ	اِنَّ	اللّٰهَ	مَعَ	الصّٰبِرِيْنَ ﴿46﴾ ج	وَلَا	تَكُوْنُوْا	كَالَّذِيْنَ
और सब्र करो	बेशक	अल्लाह	साथ है	सब्र करने वालों के	और ना	तुम हो जाओ	मानिंद उनके जो

خَرَجُوْا	مِنْ دِيَارِهِمْ	بَطَرًا	وَّرِئَآءَ	النَّاسِ	وَيَصُدُّوْنَ
निकले	अपने घरों से	इतराते हुए	और दिखावा करते हुए	लोगों को	और वो रोकते थे

عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ	وَاللّٰهُ	بِمَا	يَعْمَلُوْنَ	مُحِيْطٌ ﴿47﴾	وَاِذْ
अल्लाह के रास्ते से	और अल्लाह	उसको जो	वो अमल करते हैं	घेरने वाला है	और जब

زَيَّنَ	لَهُمُ	الشَّيْطٰنُ	اَعْمَالَهُمْ	وَقَالَ	لَا	غَالِبَ	لَكُمُ
मुज़य्यन कर दिया	उनके लिए	शैतान ने	उनके आमाल को	और उसने कहा	नहीं	कोई ग़ालिब आने वाला	तुम पर

الْيَوْمَ	مِنَ النَّاسِ	وَاِنِّيْ	جَارٌ	لَّكُمْ ج	فَلَمَّا	تَرَآءَتِ
आज के दिन	लोगों में से	और बेशक मैं	हमसाया/हिमायती हूं	तुम्हारा	तो जब	एक-दूसरे को देखा

الْفِئَتٰنِ	نَكَصَ	عَلٰى عَقِبَيْهِ	وَقَالَ	اِنِّيْ	بَرِيْٓءٌ	مِّنْكُمْ
दोनों जमाअतों ने	वो पलट गया	अपनी दोनों एड़ियों पर	और उसने कहा	बेशक मैं	बरी-उज़-ज़िम्मा	तुमसे

اِنِّيْٓ	اَرٰى	مَا	لَا تَرَوْنَ	اِنِّيْٓ	اَخَافُ	اللّٰهَ ط	وَاللّٰهُ
बेशक मैं	मैं देख रहा हूं	जो	नहीं तुम देख रहे	बेशक मैं	मैं डरता हूं	अल्लाह से	और अल्लाह

ع 6/4/2

شَدِيْدُ	الْعِقَابِ ع (48)	اِذْ	يَقُوْلُ	الْمُنٰفِقُوْنَ	وَالَّذِيْنَ	فِيْ قُلُوْبِهِمْ
सख़्त	सज़ा वाला है	जब	कह रहे थे	मुनाफ़िक़	और वो लोग	दिलों में जिनके

مَّرَضٌ	غَرَّ	هٰٓؤُلَآءِ	دِيْنُهُمْ ط	وَمَنْ	يَّتَوَكَّلْ	عَلَى اللّٰهِ	فَاِنَّ
बीमारी थी	धोखे में डाल दिया है	उन लोगों को	उनके दीन ने	और जो कोई	तवक्कल करेगा	अल्लाह पर	तो बेशक

اللّٰهَ	عَزِيْزٌ	حَكِيْمٌ (49)	وَلَوْ	تَرٰٓى	اِذْ	يَتَوَفَّى	الَّذِيْنَ
अल्लाह	बहुत ज़बरदस्त है	ख़ूब हिक्मत वाला है	और काश	आप देखें	जब	फ़ौत करते हैं	उनको जिन्होंने

كَفَرُوا لا	الْمَلٰٓئِكَةُ	يَضْرِبُوْنَ	وُجُوْهَهُمْ	وَاَدْبَارَهُمْ ج	وَذُوْقُوْا
कुफ़्र किया	फ़रिश्ते	वो मारते हैं	उनके चेहरों पर	और उनकी पीठों पर	और (वो कहते हैं) चखो

عَذَابَ	الْحَرِيْقِ (50)	ذٰلِكَ	بِمَا	قَدَّمَتْ	اَيْدِيْكُمْ	وَاَنَّ
अज़ाब	आग का	ये	बवजह उसके जो	आगे भेजा	तुम्हारे हाथों ने	और बेशक

اللّٰهَ	لَيْسَ	بِظَلَّامٍ	لِّلْعَبِيْدِ لا (51)	كَدَاْبِ	اٰلِ فِرْعَوْنَ لا	وَالَّذِيْنَ
अल्लाह	नहीं है	कोई ज़ुल्म करने वाला	बंदों पर	जैसी हालत थी	आले फ़िरऔन की	और उनकी जो

مِنْ قَبْلِهِمْ ط	كَفَرُوْا	بِاٰيٰتِ اللّٰهِ	فَاَخَذَهُمُ	اللّٰهُ	بِذُنُوْبِهِمْ ط
उनसे पहले थे	उन्होंने कुफ़्र किया	अल्लाह की आयात का	फिर पकड़ लिया उन्हें	अल्लाह ने	बवजह उनके गुनाहों के

اِنَّ	اللّٰهَ	قَوِیٌّ	شَدِیْدُ	الْعِقَابِ ﴿52﴾	ذٰلِكَ	بِاَنَّ	اللّٰهَ	لَمْ
बेशक	अल्लाह	बहुत क़ुव्वत वाला है	सख़्त	सज़ा वाला है	ये	बवजह इसके कि	अल्लाह	नहीं

یَكُ	مُغَیِّرًا	نِّعْمَةً	اَنْعَمَهَا	عَلٰی قَوْمٍ	حَتّٰی	یُغَیِّرُوْا	مَا
है वो	तब्दील करने वाला	किसी नेअमत को	उसने इनाम किया हो जिसे	किसी क़ौम पर	यहां तक कि	वो तब्दील कर दें	उसे जो

بِاَنْفُسِهِمْ ۙ	وَ اَنَّ	اللّٰهَ	سَمِیْعٌ	عَلِیْمٌ ﴿53﴾ ۙ	كَدَاْبِ	اٰلِ فِرْعَوْنَ ۙ
उनके नफ़्सों में है	और बेशक	अल्लाह	ख़ूब सूनने वाला है	ख़ूब जानने वाला है	जैसी हालत थी	आले फ़िरऔन की

وَالَّذِیْنَ	مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ	كَذَّبُوْا	بِاٰیٰتِ	رَبِّهِمْ	فَاَهْلَكْنٰهُمْ
और उनकी जो	उनसे पहले थे	उन्होंने झुठलाया	आयात को	अपने रब की	तो हलाक कर दिया हमने उन्हें

بِذُنُوْبِهِمْ	وَ اَغْرَقْنَاۤ	اٰلَ فِرْعَوْنَ ۚ	وَ كُلٌّ	كَانُوْا	ظٰلِمِیْنَ ﴿54﴾
बवजह उनके गुनाहों के	और ग़र्क़ कर दिया हमने	आले फ़िरऔन को	और सबके सब	थे वो	ज़ालिम

اِنَّ	شَرَّ	الدَّوَآبِّ	عِنْدَ اللّٰهِ	الَّذِیْنَ	كَفَرُوْا	فَهُمْ
बेशक	बदतरीन	जानदारों में	अल्लाह के नज़दीक	वो हैं जिन्होंने	कुफ़्र किया	पस वो

لَا یُؤْمِنُوْنَ ﴿55﴾ ۝	اَلَّذِیْنَ	عٰهَدْتَّ	مِنْهُمْ	ثُمَّ	یَنْقُضُوْنَ	عَهْدَهُمْ
नहीं वो ईमान लाऐंगे	वो लोग जो	अहद लिया आपने	उनसे	फिर	वो तोड़ देते हैं	अपने अहद को

فِیْ كُلِّ	مَرَّةٍ	وَّهُمْ	لَا یَتَّقُوْنَ ﴿56﴾	فَاِمَّا	تَثْقَفَنَّهُمْ	فِی الْحَرْبِ
हर	बार	और वो	नहीं वो डरते	फिर अगर	आप पाऐं उन्हें	जंग में

فَشَرِّدْ	بِهِمْ	مَّنْ	خَلْفَهُمْ	لَعَلَّهُمْ	یَذَّكَّرُوْنَ ﴿57﴾	وَ اِمَّا
तो मार भगाऐं	उनके ज़रिए	उन्हें जो	पीछे हैं उनके	शायद कि वो	वो नसीहत पकड़ें	और अगर

تَخَافَنَّ	مِنْ قَوْمٍ	خِیَانَةً	فَانْۢبِذْ	اِلَیْهِمْ	عَلٰی سَوَآءٍ ؕ
आप वाक़ई ख़ौफ़ रखते हैं	किसी क़ौम से	ख़्यानत का	पस फेंक दीजिए (अहद)	तरफ़ उनके	बराबरी पर

ع 7 10 3

اِنَّ	اللّٰهَ	لَا يُحِبُّ	الْخَآئِنِيْنَ ﴿58﴾ ع	وَلَا	يَحْسَبَنَّ	الَّذِيْنَ	كَفَرُوْا
बेशक	अल्लाह	नहीं वो पसंद करता	ख़्यानत करने वालों को	और ना	हरगिज़ गुमान करें	वो जिन्होंने	कुफ़्र किया

سَبَقُوْا ؕ	اِنَّهُمْ	لَا يُعْجِزُوْنَ ﴿59﴾	وَاَعِدُّوْا	لَهُمْ	مَّا
कि वो सबक़त ले गए	बेशक वो	नहीं वो आजिज़ कर सकते	और तैयार रखो	उनके लिए	जो

اسْتَطَعْتُمْ	مِّنْ قُوَّةٍ	وَّمِنْ رِّبَاطِ الْخَيْلِ	تُرْهِبُوْنَ	بِهٖ
इस्तिताअत रखते हो तुम	क़ुव्वत में से	और बांधे हुए घोड़ों से	तुम डराओगे	साथ उसके

عَدُوَّ اللّٰهِ	وَعَدُوَّكُمْ	وَاٰخَرِيْنَ	مِنْ دُوْنِهِمْ ۚ	لَا تَعْلَمُوْنَهُمْ ۚ
अल्लाह के दुश्मनों को	और अपने दुश्मनों को	और कुछ दूसरों को	उनके इलावा	नहीं तुम जानते उन्हें

اَللّٰهُ	يَعْلَمُهُمْ ؕ	وَمَا	تُنْفِقُوْا	مِنْ شَيْءٍ	فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ	يُوَفَّ
अल्लाह	वो जानता है उन्हें	और जो	तुम ख़र्च करोगे	कुछ भी	अल्लाह के रास्ते में	वो पूरा-पूरा दिया जाएगा

اِلَيْكُمْ	وَاَنْتُمْ	لَا تُظْلَمُوْنَ ﴿60﴾	وَاِنْ	جَنَحُوْا	لِلسَّلْمِ	فَاجْنَحْ
तुम्हें	और तुम	ना तुम ज़ुल्म किए जाओगे	और अगर	वो माइल हों	सुलह के लिए	तो आप भी माइल हो जाइए

لَهَا	وَتَوَكَّلْ	عَلَى اللّٰهِ ؕ	اِنَّهٗ	هُوَ	السَّمِيْعُ	الْعَلِيْمُ ﴿61﴾	وَاِنْ
उसके लिए	और तवक्कल कीजिए	अल्लाह पर	बेशक वो	वो ही है	ख़ूब सुनने वाला	ख़ूब जानने वाला	और अगर

يُّرِيْدُوْٓا	اَنْ	يَّخْدَعُوْكَ	فَاِنَّ	حَسْبَكَ	اللّٰهُ ؕ	هُوَ	الَّذِيْٓ
वो चाहें	कि	वो धोखा दें आपको	तो बेशक	काफ़ी है आपको	अल्लाह	वो ही है	जिसने

اَيَّدَكَ	بِنَصْرِهٖ	وَبِالْمُؤْمِنِيْنَ ﴿62﴾ لا	وَاَلَّفَ	بَيْنَ	قُلُوْبِهِمْ ؕ	لَوْ
ताईद की आपकी	साथ अपनी मदद के	और साथ मोमिनों के	और उसने उलफ़त डाल दी	दर्मियान	उनके दिलों के	अगर

اَنْفَقْتَ	مَا	فِي الْاَرْضِ	جَمِيْعًا	مَّآ	اَلَّفْتَ	بَيْنَ	قُلُوْبِهِمْ
ख़र्च करते आप	जो कुछ	ज़मीन में है	सारे का सारा	ना	उलफ़त डाल सकते थे आप	दर्मियान	उनके दिलों के

وَلٰكِنَّ	اللّٰهَ	اَلَّفَ	بَيْنَهُمْ ؕ	اِنَّهٗ	عَزِيْزٌ	حَكِيْمٌ ﴿63﴾
और लेकिन	अल्लाह ने	उलफ़त डाल दी	दर्मियान उनके	बेशक वो	बहुत ज़बरदस्त है	बहुत हिक्मत वाला है

ع 8 6 4

يٰٓاَيُّهَا	النَّبِيُّ	حَسْبُكَ	اللّٰهُ	وَمَنِ	اتَّبَعَكَ	مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿64﴾ ع
ऐ	नबी	काफ़ी है आपको	अल्लाह	और उसे जो	पैरवी करे आपकी	मोमिनों में से

يٰٓاَيُّهَا	النَّبِيُّ	حَرِّضِ	الْمُؤْمِنِيْنَ	عَلَى الْقِتَالِ ؕ	اِنْ	يَّكُنْ	مِّنْكُمْ
ऐ	नबी	रग़बत दिलाइए	मोमिनों को	जंग पर	अगर	होंगे	तुम में से

عِشْرُوْنَ	صٰبِرُوْنَ	يَغْلِبُوْا	مِائَتَيْنِ ۚ	وَاِنْ	يَّكُنْ	مِّنْكُمْ
बीस	सब्र करने वाले	वो ग़ालिब आ जाऐंगे	दो सौ पर	और अगर	होंगे	तुम में से

مِّائَةٌ	يَّغْلِبُوْٓا	اَلْفًا	مِّنَ الَّذِيْنَ	كَفَرُوْا	بِاَنَّهُمْ
एक सौ	वो ग़ालिब आ जाऐंगे	एक हज़ार पर	उनमें से जिन्होंने	कुफ़्र किया	बवजह उसके कि वो

قَوْمٌ	لَّا يَفْقَهُوْنَ ﴿65﴾	اَلْـٰٔنَ	خَفَّفَ	اللّٰهُ	عَنْكُمْ	وَعَلِمَ
ऐसे लोग हैं	जो समझ नहीं रखते	अब	हल्का कर दिया (बोझ)	अल्लाह ने	तुमसे	और उसने जान लिया

اَنَّ	فِيْكُمْ	ضَعْفًا ؕ	فَاِنْ	يَّكُنْ	مِّنْكُمْ	مِّائَةٌ	صَابِرَةٌ
बेशक	तुम में	कमज़ोरी है	पस अगर	हों	तुम में से	एक सौ	सब्र करने वाले

يَّغْلِبُوْا	مِائَتَيْنِ ۚ	وَاِنْ	يَّكُنْ	مِّنْكُمْ	اَلْفٌ	يَّغْلِبُوْٓا
वो ग़ालिब आ जाऐंगे	दोसौ पर	और अगर	हों	तुम में से	एक हज़ार	वो ग़ालिब आ जाऐंगे

اَلْفَيْنِ	بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ	وَاللّٰهُ	مَعَ	الصّٰبِرِيْنَ ﴿66﴾	مَا	كَانَ	لِنَبِيٍّ
दो हज़ार पर	अल्लाह के इज़्न से	और अल्लाह	साथ है	सब्र करने वालों के	नहीं	है	किसी नबी के लिए

اَنْ	يَّكُوْنَ	لَهٗٓ	اَسْرٰى	حَتّٰى	يُثْخِنَ	فِى الْاَرْضِ ؕ
कि	हों	उसके लिए	क़ैदी	यहां तक कि	वो अच्छी तरह ख़ून बहा दे	ज़मीन में

تُرِيْدُوْنَ	عَرَضَ	الدُّنْيَا ۗ	وَاللّٰهُ	يُرِيْدُ	الْاٰخِرَةَ ؕ	وَاللّٰهُ	عَزِيْزٌ
तुम चाहते हो	सामान	दुनिया का	और अल्लाह	चाहता है	आख़िरत	और अल्लाह	बहुत ज़बरदस्त है

حَكِيْمٌ ﴿67﴾	لَوْلَا	كِتٰبٌ	مِّنَ اللّٰهِ	سَبَقَ	لَمَسَّكُمْ	فِيْمَآ
ख़ूब हिक्मत वाला है	अगर ना होता	लिखा हुआ	अल्लाह की तरफ़ से	जो गुज़र चुका	अलबत्ता पहुंचता तुम्हें	इसके (बदले) में जो

اَخَذْتُمْ	عَذَابٌ	عَظِيْمٌ ﴿68﴾	فَكُلُوْا	مِمَّا	غَنِمْتُمْ	حَلٰلًا
लिया तुमने	अज़ाब	बहुत बड़ा	पस खाओ	उसमें से जो	ग़नीमत पाई तुमने	हलाल

طَيِّبًا ۖ	وَّاتَّقُوا	اللّٰهَ ؕ	اِنَّ	اللّٰهَ	غَفُوْرٌ	رَّحِيْمٌ ﴿69﴾ ع
पाक	और डरो	अल्लाह से	बेशक	अल्लाह	बहुत बख़्शने वाला है	निहायत रहम करने वाला है

ع 9 5 5

يٰٓاَيُّهَا	النَّبِيُّ	قُلْ	لِّمَنْ	فِيْٓ اَيْدِيْكُمْ	مِّنَ الْاَسْرٰٓى ۙ	اِنْ
ऐ	नबी	कह दीजिए	उनसे जो	तुम्हारे हाथों में हैं	क़ैदियों में से	अगर

يَّعْلَمِ	اللّٰهُ	فِيْ قُلُوْبِكُمْ	خَيْرًا	يُّؤْتِكُمْ	خَيْرًا	مِّمَّآ	اُخِذَ
जान लेगा	अल्लाह	तुम्हारे दिलों में	कोई भलाई	वो देगा तुम्हें	बेहतर	उससे जो	ले लिया गया

مِنْكُمْ	وَيَغْفِرْ	لَكُمْ ؕ	وَاللّٰهُ	غَفُوْرٌ	رَّحِيْمٌ ﴿70﴾	وَاِنْ
तुम से	और वो बख़्श देगा	तुम्हें	और अल्लाह	बहुत बख़्शने वाला है	निहायत रहम करने वाला है	और अगर

يُّرِيْدُوْا	خِيَانَتَكَ	فَقَدْ	خَانُوا	اللّٰهَ	مِنْ قَبْلُ	فَاَمْكَنَ
वो इरादा करेंगे	आपसे ख़्यानत का	पस तहक़ीक़	ख़्यानत की	अल्लाह से	इससे पहले	तो उसने क़ाबू में दे दिया

مِنْهُمْ ؕ	وَاللّٰهُ	عَلِيْمٌ	حَكِيْمٌ ﴿71﴾	اِنَّ	الَّذِيْنَ	اٰمَنُوْا	وَهَاجَرُوْا
उन्हें	और अल्लाह	बहुत इल्म वाला है	बहुत हिक्मत वाला है	बेशक	वो जो	ईमान लाए	और उन्होंने हिजरत की

وَجٰهَدُوْا	بِاَمْوَالِهِمْ	وَاَنْفُسِهِمْ	فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ	وَالَّذِيْنَ
और उन्होंने जिहाद किया	साथ अपने मालों	और अपनी जानों के	अल्लाह के रास्ते में	और वो जिन्होंने

اٰوَوْا	وَّنَصَرُوْٓا	اُولٰٓئِكَ	بَعْضُهُمْ	اَوْلِيَآءُ	بَعْضٍ ؕ	وَالَّذِيْنَ
पनाह दी	और मदद की	यही लोग हैं	बाज़ उनके	दोस्त हैं	बाज़ के	और वो जो

اٰمَنُوْا	وَلَمْ	يُهَاجِرُوْا	مَا	لَكُمْ	مِّنْ وَّلَايَتِهِمْ	مِّنْ شَيْءٍ
ईमान लाए	और नहीं	उन्होंने हिजरत की	नहीं है	तुम्हारे लिए	उनकी दोस्ती में से	कोई भी चीज़

حَتّٰى	يُهَاجِرُوْا ۚ	وَاِنِ	اسْتَنْصَرُوْكُمْ	فِي الدِّيْنِ	فَعَلَيْكُمُ
यहां तक कि	वो हिजरत कर जाऐं	और अगर	वो मदद मांगें तुमसे	दीन के मामले में	तो तुम पर लाज़िम है

النَّصْرُ	اِلَّا	عَلٰى قَوْمٍ	بَيْنَكُمْ	وَبَيْنَهُمْ	مِّيْثَاقٌ ؕ	وَاللّٰهُ
मदद करना	मगर	उस क़ौम के ख़िलाफ़	दर्मियान तुम्हारे	और दर्मियान उनके	पुख़्ता मुआहिदा है	और अल्लाह

بِمَا	تَعْمَلُوْنَ	بَصِيْرٌ ﴿72﴾	وَالَّذِيْنَ	كَفَرُوْا	بَعْضُهُمْ	اَوْلِيَآءُ
उसे जो	तुम अमल करते हो	ख़ूब देखने वाला है	और वो जिन्होंने	कुफ़्र किया	बाज़ उनके	मददगार हैं

بَعْضٍ ؕ	اِلَّا	تَفْعَلُوْهُ	تَكُنْ	فِتْنَةٌ	فِي الْاَرْضِ	وَفَسَادٌ	كَبِيْرٌ ﴿73﴾ ؕ
बाज़ के	अगर नहीं	तुम करोगे ऐसा	होगा	फ़ितना	ज़मीन में	और फ़साद	बहुत बड़ा

وَالَّذِيْنَ	اٰمَنُوْا	وَهَاجَرُوْا	وَجٰهَدُوْا	فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ	وَالَّذِيْنَ
और वो जो	ईमान लाए	और उन्होंने हिजरत की	और उन्होंने जिहाद किया	अल्लाह के रास्ते में	और वो जिन्होंने

اٰوَوْا	وَّنَصَرُوْٓا	اُولٰٓئِكَ	هُمُ	الْمُؤْمِنُوْنَ	حَقًّا ؕ	لَهُمْ	مَّغْفِرَةٌ
पनाह दी	और मदद की	यही लोग हैं	वो	जो मोमिन हैं	सच्चे	उनके लिए	बख़्शिश है

وَّرِزْقٌ	كَرِيْمٌ ﴿74﴾	وَالَّذِيْنَ	اٰمَنُوْا	مِنْۢ بَعْدُ	وَهَاجَرُوْا	وَجٰهَدُوْا
और रिज़्क़	इज़्ज़त वाला	और वो जो	ईमान लाए	बाद इसके	और उन्होंने हिजरत की	और जिहाद किया

مَعَكُمْ	فَاُولٰٓئِكَ	مِنْكُمْ ؕ	وَاُولُوا الْاَرْحَامِ	بَعْضُهُمْ	اَوْلٰى
तुम्हारे साथ	तो यही लोग हैं	तुम में से	और रहम / रिश्तों वाले	बाज़ उनके	ज़्यादा क़रीब हैं

ع 10 6 6

بِبَعْضٍ	فِيْ كِتٰبِ اللّٰهِ ؕ	اِنَّ	اللّٰهَ	بِكُلِّ	شَيْءٍ	عَلِيْمٌ ﴿75﴾ ع
बाज़ के	अल्लाह की किताब में	बेशक	अल्लाह	हर	चीज़ को	ख़ूब जानने वाला है

9 سُوْرَةُ التَّوْبَةِ مَدَنِيَّةٌ 113

اٰيَاتُهَا: 129 — رُكُوْعَاتُهَا: 16

بَرَآءَةٌ	مِّنَ اللّٰهِ	وَ رَسُوْلِهٖٓ	اِلَى الَّذِيْنَ	عٰهَدْتُّمْ
(ऐलान) बराअत है	अल्लाह की तरफ़ से	और उसके रसूल (की तरफ़ से)	तरफ़ उनके जिनसे	मुआहिदा किया तुमने

مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿1﴾ ؕ	فَسِيْحُوْا	فِي الْاَرْضِ	اَرْبَعَةَ	اَشْهُرٍ	وَّاعْلَمُوْٓا
मुशरिकीन में से	पस चलो-फिरो तुम	ज़मीन में	चार	महीने	और जान लो

اَنَّكُمْ	غَيْرُ	مُعْجِزِي	اللّٰهِ ۙ	وَ اَنَّ	اللّٰهَ	مُخْزِي	الْكٰفِرِيْنَ ﴿2﴾
बेशक तुम	नहीं	आजिज़ करने वाले	अल्लाह को	और बेशक	अल्लाह	रुसवा करने वाला है	काफ़िरों को

وَ اَذَانٌ	مِّنَ اللّٰهِ	وَ رَسُوْلِهٖٓ	اِلَى النَّاسِ	يَوْمَ	الْحَجِّ الْاَكْبَرِ
और ऐलान है	अल्लाह की तरफ़ से	और उसके रसूल की तरफ़ से	तरफ़ लोगों के	दिन	हज्जेअकबर के

اَنَّ	اللّٰهَ	بَرِيْٓءٌ	مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ ۙ	وَ رَسُوْلُهٗ ؕ	فَاِنْ	تُبْتُمْ	فَهُوَ
बेशक	अल्लाह	बरीउज़्ज़िम्मा है	मुशरिकों से	और उसका रसूल भी	फिर अगर	तौबा कर लो तुम	तो वो

خَيْرٌ	لَّكُمْ ۚ	وَ اِنْ	تَوَلَّيْتُمْ	فَاعْلَمُوْٓا	اَنَّكُمْ	غَيْرُ	مُعْجِزِي
बेहतर है	तुम्हारे लिए	और अगर	मुंह फेरा तुमने	तो जान लो	बेशक तुम	नहीं	आजिज़ करने वाले

اللّٰهِ ؕ	وَ بَشِّرِ	الَّذِيْنَ	كَفَرُوْا	بِعَذَابٍ	اَلِيْمٍ ﴿3﴾ ۙ	اِلَّا
अल्लाह को	और ख़ुशख़बरी दे दीजिए	उनको जिन्होंने	कुफ़्र किया	अज़ाब	दर्दनाक की	सिवाए

الَّذِيْنَ	عٰهَدْتُّمْ	مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ	ثُمَّ	لَمْ	يَنْقُصُوْكُمْ	شَيْـًٔا
उनके जिनसे	मुआहिदा किया तुमने	मुशरिकीन में से	फिर	नहीं	उन्होंने कमी की तुमसे	कुछ भी

وَّلَمْ	يُظَاهِرُوْا	عَلَيْكُمْ	اَحَدًا	فَاَتِمُّوْٓا	اِلَيْهِمْ	عَهْدَهُمْ
और ना ही	उन्होंने पुश्त पनाही की	तुम्हारे ख़िलाफ़	किसी की	तो पूरा करो	तरफ़ उनके	अहद उनके

اِلٰى مُدَّتِهِمْ ؕ	اِنَّ	اللّٰهَ	يُحِبُّ	الْمُتَّقِيْنَ ④	فَاِذَا	انْسَلَخَ
उनकी मुद्दत तक	बेशक	अल्लाह	वो पसंद करता है	मुत्तक़ी लोगों को	फिर जब	गुज़र जाऐं

الْاَشْهُرُ	الْحُرُمُ	فَاقْتُلُوا	الْمُشْرِكِيْنَ	حَيْثُ	وَجَدْتُّمُوْهُمْ
महीने	हुरमत वाले	तो क़त्ल करो	मुशरिकों को	जहां कहीं	पाओ तुम उन्हें

وَخُذُوْهُمْ	وَاحْصُرُوْهُمْ	وَاقْعُدُوْا	لَهُمْ	كُلَّ	مَرْصَدٍ ۚ	فَاِنْ
और पकड़ो उन्हें	और घेरो उन्हें	और बैठ जाओ	उनके लिए	हर	घात पर	फिर अगर

تَابُوْا	وَاَقَامُوا	الصَّلٰوةَ	وَاٰتَوُا	الزَّكٰوةَ	فَخَلُّوْا	سَبِيْلَهُمْ ؕ	اِنَّ
वो तौबा कर लें	और वो क़ायम करें	नमाज़	और वो अदा करें	ज़कात	तो छोड़ दो	रास्ता उनका	बेशक

اللّٰهَ	غَفُوْرٌ	رَّحِيْمٌ ⑤	وَاِنْ	اَحَدٌ	مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ	اسْتَجَارَكَ
अल्लाह	बहुत बख़्शने वाला है	निहायत रहम करने वाला है	और अगर	कोई एक	मुशरिकीन में से	पनाह मांगे आपसे

فَاَجِرْهُ	حَتّٰى	يَسْمَعَ	كَلٰمَ	اللّٰهِ	ثُمَّ	اَبْلِغْهُ	مَاْمَنَهٗ ؕ
तो पनाह दे दीजिए उसे	यहां तक कि	वो सुन ले	कलाम	अल्लाह का	फिर	पहुंचा दीजिए उसे	उसके अमन की जगह

ع 1 6 7

ذٰلِكَ	بِاَنَّهُمْ	قَوْمٌ	لَّا يَعْلَمُوْنَ ⑥ ع	كَيْفَ	يَكُوْنُ	لِلْمُشْرِكِيْنَ
ये	बवजह उसके कि वो	लोग	नहीं वो इल्म रखते	किस तरह	हो सकता है	मुशरिकीन के लिए

عَهْدٌ	عِنْدَ اللّٰهِ	وَعِنْدَ رَسُوْلِهٖٓ	اِلَّا	الَّذِيْنَ	عٰهَدْتُّمْ
कोई अहद	अल्लाह के नज़दीक	और उसके रसूल के नज़दीक	सिवाए	उनके जिनसे	मुआहिदा किया तुमने

عِنْدَ	الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۚ	فَمَا	اسْتَقَامُوْا	لَكُمْ	فَاسْتَقِيْمُوْا	لَهُمْ ؕ
पास	मस्जिदे हराम के	तो जब तक	वो सीधे रहें	तुम्हारे लिए	पस तुम भी सीधे रहो	उनके लिए

اِنَّ	اللّٰهَ	يُحِبُّ	الْمُتَّقِيْنَ ⑦	كَيْفَ	وَاِنْ	يَّظْهَرُوْا	عَلَيْكُمْ
बेशक	अल्लाह	वो पसंद करता है	मुत्तक़ी लोगों को	कैसे (मुमकिन है)	जबकि अगर	वो ग़लबा पा जाऐं	तुम पर

لَا يَرْقُبُوْا	فِيْكُمْ	اِلًّا	وَّلَا	ذِمَّةً ؕ	يُرْضُوْنَكُمْ	بِاَفْوَاهِهِمْ	
ना वो लिहाज़ करेंगे	तुम्हारे मामले में	किसी क़राबत का	और ना	किसी मुआहिदे का	वो राज़ी करते हैं तुम्हें	अपने मुंहों से	

وَتَاْبٰى	قُلُوْبُهُمْ ۚ	وَاَكْثَرُهُمْ	فٰسِقُوْنَ ⑧ ۚ	اِشْتَرَوْا	بِاٰيٰتِ اللّٰهِ
और इंकार करते हैं	दिल उनके	और अक्सर उनके	फ़ासिक़ हैं	उन्होंने बेच डाला	अल्लाह की आयात को

ثَمَنًا	قَلِيْلًا	فَصَدُّوْا	عَنْ سَبِيْلِهٖ ؕ	اِنَّهُمْ	سَآءَ	مَا	كَانُوْا
क़ीमत	थोड़ी में	फिर उन्होंने रोका	उसके रास्ते से	बेशक वो	कितना बुरा है	जो	हैं वो

يَعْمَلُوْنَ ⑨	لَا يَرْقُبُوْنَ	فِيْ مُؤْمِنٍ	اِلًّا	وَّلَا	ذِمَّةً ؕ
वो अमल कर रहे	नहीं वो लिहाज़ करते	किसी मोमिन (के बारे में)	किसी क़राबत का	और ना	किसी मुआहिदे का

وَاُولٰٓئِكَ	هُمُ	الْمُعْتَدُوْنَ ⑩	فَاِنْ	تَابُوْا	وَاَقَامُوا	الصَّلٰوةَ	وَاٰتَوُا
और यही लोग हैं	वो	जो हद से बढ़ने वाले हैं	फिर अगर	वो तौबा कर लें	और वो क़ायम करें	नमाज़	और वो अदा करें

الزَّكٰوةَ	فَاِخْوَانُكُمْ	فِي الدِّيْنِ ؕ	وَنُفَصِّلُ	الْاٰيٰتِ	لِقَوْمٍ
ज़कात	तो भाई हैं तुम्हारे	दीन में	और हम खोल-खोल कर बयान करते हैं	आयात को	उन लोगों के लिए

يَّعْلَمُوْنَ ⑪	وَاِنْ	نَّكَثُوْٓا	اَيْمَانَهُمْ	مِّنْۢ بَعْدِ	عَهْدِهِمْ	وَطَعَنُوْا
जो इल्म रखते हैं	और अगर	वो तोड़ दें	अपनी क़समें	बाद	अपने अहद करने के	और वो तअन करें

فِيْ دِيْنِكُمْ	فَقَاتِلُوْٓا	اَئِمَّةَ	الْكُفْرِ ۙ	اِنَّهُمْ	لَآ اَيْمَانَ	لَهُمْ
तुम्हारे दीन में	तो जंग करो	इमामों से	कुफ़्र के	बेशक वो	नहीं हैं कोई क़समें	उनकी

لَعَلَّهُمْ	يَنْتَهُوْنَ ⑫	اَلَا	تُقَاتِلُوْنَ	قَوْمًا	نَّكَثُوْٓا	اَيْمَانَهُمْ
ताकि वो	वो रुक जाऐं	क्या नहीं	तुम जंग करोगे	ऐसी क़ौम से	जिन्होंने तोड़ दीं	अपनी क़समें

وَهَمُّوْا	بِاِخْرَاجِ	الرَّسُوْلِ	وَهُمْ	بَدَءُوْكُمْ	اَوَّلَ مَرَّةٍ ؕ
और उन्होंने इरादा किया	निकालने का	रसूल को	हालांकि वो	उन्होंने इब्तिदा की थी तुमसे	पहली मर्तबा
اَتَخْشَوْنَهُمْ ۚ	فَاللّٰهُ	اَحَقُّ	اَنْ	تَخْشَوْهُ	اِنْ	كُنْتُمْ
क्या तुम डरते हो उनसे	तो अल्लाह	ज़्यादा हक़दार है	कि	तुम डरो उससे	अगर	हो तुम
مُّؤْمِنِيْنَ ﴿13﴾	قَاتِلُوْهُمْ	يُعَذِّبْهُمُ	اللّٰهُ	بِاَيْدِيْكُمْ	وَيُخْزِهِمْ
ईमान लाने वाले	जंग करो उनसे	अज़ाब देगा उन्हें	अल्लाह	तुम्हारे हाथों से	और वो रुसवा करेगा उन्हें
وَيَنْصُرْكُمْ	عَلَيْهِمْ	وَيَشْفِ	صُدُوْرَ	قَوْمٍ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿14﴾ ۙ	وَيُذْهِبْ
और वो मदद करेगा तुम्हारी	उनके ख़िलाफ़	और वो शिफ़ा बख़्शेगा	सीनों को	मोमिन क़ौम के	और वो ले जाएगा
غَيْظَ	قُلُوْبِهِمْ ؕ	وَيَتُوْبُ	اللّٰهُ	عَلٰى مَنْ	يَّشَآءُ ؕ	وَاللّٰهُ	عَلِيْمٌ
ग़ुस्सा	उनके दिलों का	और मेहरबान होगा	अल्लाह	ऊपर जिसके	वो चाहेगा	और अल्लाह	ख़ूब इल्म वाला है
حَكِيْمٌ ﴿15﴾	اَمْ	حَسِبْتُمْ	اَنْ	تُتْرَكُوْا	وَلَمَّا	يَعْلَمِ	اللّٰهُ
बहुत हिक्मत वाला है	क्या	गुमान किया तुमने	कि	तुम छोड़ दिए जाओगे	हालांकि अभी तक नहीं	जाना	अल्लाह ने
اَلَّذِيْنَ	جٰهَدُوْا	مِنْكُمْ	وَلَمْ	يَتَّخِذُوْا	مِنْ دُوْنِ	اللّٰهِ	وَلَا
उनको जिन्होंने	जिहाद किया	तुम में से	और नहीं	उन्होंने बनाया	सिवाए	अल्लाह के	और ना
رَسُوْلِهٖ	وَلَا	الْمُؤْمِنِيْنَ	وَلِيْجَةً ؕ	وَاللّٰهُ	خَبِيْرٌۢ	بِمَا
उसके रसूल के	और ना	मोमिनों के	कोई दिली दोस्त	और अल्लाह	ख़ूब ख़बर रखने वाला है	उसकी जो
تَعْمَلُوْنَ ﴿16﴾ ع	مَا	كَانَ	لِلْمُشْرِكِيْنَ	اَنْ	يَّعْمُرُوْا	مَسٰجِدَ	اللّٰهِ
तुम अमल करते हो	नहीं	है	मुशरिकीन के लिए	कि	वो आबाद करें	मस्जिदें	अल्लाह की
شٰهِدِيْنَ	عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ	بِالْكُفْرِ ؕ	اُولٰٓئِكَ	حَبِطَتْ	اَعْمَالُهُمْ ۖۚ
शहादत देने वाले	अपने नफ़्सों पर	कुफ़्र की	यही लोग हैं	ज़ाया हो गए	आमाल उनके

ع 2 10 8

مَنْ	اللّٰهِ	مَسٰجِدَ	يَعْمُرُ	اِنَّمَا	خٰلِدُوْنَ ﴿17﴾	هُمْ	وَفِي النَّارِ
वो जो	अल्लाह की	मस्जिदें	आबाद करता है	बेशक	हमेशा रहने वाले हैं	वो	और आग में

اٰمَنَ	بِاللّٰهِ	وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ	وَاَقَامَ	الصَّلٰوةَ	وَاٰتَى	الزَّكٰوةَ	وَلَمْ
ईमान लाए	अल्लाह पर	और आख़िरी दिन पर	और वो क़ायम करे	नमाज़	और अदा करे	ज़कात	और ना

يَخْشَ	اِلَّا	اللّٰهَ	فَعَسٰٓى	اُولٰٓئِكَ	اَنْ	يَّكُوْنُوْا	مِنَ الْمُهْتَدِيْنَ ﴿18﴾
वो डरे	सिवाए	अल्लाह के	तो उम्मीद है	ये लोग	कि	वो होंगे	हिदायत पाने वालें में से

اَجَعَلْتُمْ	سِقَايَةَ	الْحَآجِّ	وَعِمَارَةَ	الْمَسْجِدِ	الْحَرَامِ	كَمَنْ
क्या बना लिया तुमने	पानी पिलाना	हाजियों को	और आबाद करना	मस्जिदे	हराम को	मानिंद उसके जो

اٰمَنَ	بِاللّٰهِ	وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ	وَجٰهَدَ	فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ	لَا يَسْتَوٗنَ
ईमान लाया	अल्लाह पर	और आख़िरी दिन पर	और उसने जिहाद किया	अल्लाह के रास्ते में	नहीं वो बराबर हो सकते

وقف لازم

عِنْدَ اللّٰهِ ؕ	وَاللّٰهُ	لَا يَهْدِي	الْقَوْمَ	الظّٰلِمِيْنَ ﴿19﴾	اَلَّذِيْنَ	اٰمَنُوْا
अल्लाह के नज़दीक	और अल्लाह	नहीं हिदायत देता	उन लोगों को	जो ज़ालिम हैं	वो जो	ईमान लाए

وَهَاجَرُوْا	وَجٰهَدُوْا	فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ	بِاَمْوَالِهِمْ	وَاَنْفُسِهِمْ ۙ	اَعْظَمُ
और उन्होंने हिजरत की	और उन्होंने जिहाद किया	अल्लाह के रास्ते में	अपने मालों से	और अपनी जानों से	ज़्यादा बड़े है

دَرَجَةً	عِنْدَ اللّٰهِ ؕ	وَاُولٰٓئِكَ	هُمُ	الْفَآئِزُوْنَ ﴿20﴾	يُبَشِّرُهُمْ	رَبُّهُمْ
दरजे में	अल्लाह के नज़दीक	और यही लोग हैं	वो	जो कामयाब होने वाले हैं	ख़ुशख़बरी देता है उन्हें	रब उनका

بِرَحْمَةٍ	مِّنْهُ	وَرِضْوَانٍ	وَّجَنّٰتٍ	لَّهُمْ	فِيْهَا	نَعِيْمٌ	مُّقِيْمٌ ﴿21﴾ ۙ
रहमत की	अपनी तरफ़ से	और रज़ामंदी की	और बाग़ात की	उनके लिए	उनमें	नेअमतें हैं	क़ायम रहने वाली

خٰلِدِيْنَ	فِيْهَآ	اَبَدًا ؕ	اِنَّ	اللّٰهَ	عِنْدَهٗٓ	اَجْرٌ	عَظِيْمٌ ﴿22﴾
हमेशा रहने वाले हैं	उनमें	हमेशा-हमेशा	बेशक	अल्लाह	उसके पास	अजर है	बहुत बड़ा

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ	اٰمَنُوْا	لَا تَتَّخِذُوْٓا	اٰبَآءَكُمْ	وَاِخْوَانَكُمْ	اَوْلِيَآءَ
ऐ लोगो जो	ईमान लाए हो	ना तुम बनाओ	अपने आबा ओ अजदाद को	और अपने भाईयों को	दोस्त

اِنِ	اسْتَحَبُّوا	الْكُفْرَ	عَلَى الْاِيْمَانِ ؕ	وَمَنْ	يَّتَوَلَّهُمْ	مِّنْكُمْ
अगर	वो तरजीह दें	कुफ़्र को	ईमान पर	और जो कोई	दोस्त रखेगा उन्हें	तुम में से

فَاُولٰٓئِكَ	هُمُ	الظّٰلِمُوْنَ ﴿23﴾	قُلْ	اِنْ	كَانَ	اٰبَآؤُكُمْ	وَاَبْنَآؤُكُمْ
तो यही लोग हैं	वो	जो ज़ालिम हैं	कह दीजिए	अगर	हैं	आबा ओ अजदाद तुम्हारे	और बेटे तुम्हारे

وَاِخْوَانُكُمْ	وَاَزْوَاجُكُمْ	وَعَشِيْرَتُكُمْ	وَاَمْوَالُ ۨ	اقْتَرَفْتُمُوْهَا
और भाई तुम्हारे	और बीवियां तुम्हारी	और ख़ानदान तुम्हारे	और माल	कमाया तुमने जिन्हें

وَتِجَارَةٌ	تَخْشَوْنَ	كَسَادَهَا	وَمَسٰكِنُ	تَرْضَوْنَهَآ	اَحَبَّ
और तिजारत	तुम डरते हो	उसके मंदा होने से	और घर	तुम पसंद करते हो जिन्हें	ज़्यादा महबूब हैं

اِلَيْكُمْ	مِّنَ اللّٰهِ	وَرَسُوْلِهٖ	وَجِهَادٍ	فِيْ سَبِيْلِهٖ	فَتَرَبَّصُوْا	حَتّٰى
तरफ़ तुम्हारे	अल्लाह से	और उसके रसूल से	और जिहाद से	उसके रास्ते में	तो इंतिज़ार करो	यहां तक कि

ع 3 8 9

يَاْتِيَ	اللّٰهُ	بِاَمْرِهٖ ؕ	وَاللّٰهُ	لَا يَهْدِي	الْقَوْمَ	الْفٰسِقِيْنَ ﴿24﴾ ع	لَقَدْ
ले आए	अल्लाह	फ़ैसला अपना	और अल्लाह	नहीं वो हिदायत देता	उन लोगों को	जो फ़ासिक़ हैं	अलबत्ता तहक़ीक़

نَصَرَكُمُ	اللّٰهُ	فِيْ مَوَاطِنَ	كَثِيْرَةٍ ۙ	وَّيَوْمَ حُنَيْنٍ ۙ	اِذْ	اَعْجَبَتْكُمْ
मदद की तुम्हारी	अल्लाह ने	जगहों में	बहुत सी	और हुनैन के दिन	जब	भली लगी तुम्हें

كَثْرَتُكُمْ	فَلَمْ	تُغْنِ	عَنْكُمْ	شَيْـًٔا	وَّضَاقَتْ	عَلَيْكُمُ	الْاَرْضُ
कसरत तुम्हारी	पस ना	उसने फ़ायदा दिया	तुम्हें	कुछ भी	और तंग हो गई	तुम पर	ज़मीन

بِمَا	رَحُبَتْ	ثُمَّ	وَلَّيْتُمْ	مُّدْبِرِيْنَ ﴿25﴾ ج	ثُمَّ	اَنْزَلَ	اللّٰهُ
बावजूद उसके जो	वो कुशादा थी	फिर	फिर गए तुम	पीठ फेर कर	फिर	उतारी	अल्लाह ने

سَكِيْنَتَهٗ	عَلٰى رَسُوْلِهٖ	وَعَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ	وَاَنْزَلَ	جُنُوْدًا	لَّمْ
सकीनत अपनी	अपने रसूल पर	और मोमिनों पर	और उसने उतारे	ऐसे लश्कर	नहीं

تَرَوْهَا	وَعَذَّبَ	الَّذِيْنَ	كَفَرُوْا ط	وَذٰلِكَ	جَزَآءُ	الْكٰفِرِيْنَ (26)
देखा तुमने उन्हें	और उसने अज़ाब दिया	उनको जिन्होंने	कुफ़्र किया	और यही है	बदला	काफ़िरों का

ثُمَّ	يَتُوْبُ	اللّٰهُ	مِنْۢ بَعْدِ	ذٰلِكَ	عَلٰى مَنْ	يَّشَآءُ ط	وَاللّٰهُ	غَفُوْرٌ
फिर	मेहरबान होगा	अल्लाह	बाद	इसके	जिस पर	वो चाहेगा	और अल्लाह	बहुत बख़्शने वाला है

رَّحِيْمٌ (27)	يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ	اٰمَنُوْۤا	اِنَّمَا	الْمُشْرِكُوْنَ	نَجَسٌ	فَلَا
निहायत रहम करने वाला है	ऐ लोगो जो	ईमान लाए हो	बेशक	मुशरिकीन	नापाक हैं	तो ना

يَقْرَبُوا	الْمَسْجِدَ	الْحَرَامَ	بَعْدَ	عَامِهِمْ هٰذَا ج	وَاِنْ	خِفْتُمْ
वो क़रीब आएँ	मस्जिदे	हराम के	बाद	अपने इस साल के	और अगर	ख़ौफ़ हो तुम्हें

عَيْلَةً	فَسَوْفَ	يُغْنِيْكُمُ	اللّٰهُ	مِنْ فَضْلِهٖۤ	اِنْ	شَآءَ ط	اِنَّ
मुफ़लिसी का	तो अनक़रीब	ग़नी कर देगा तुम्हें	अल्लाह	अपने फ़ज़्ल से	अगर	वो चाहे	बेशक

اللّٰهَ	عَلِيْمٌ	حَكِيْمٌ (28)	قَاتِلُوا	الَّذِيْنَ	لَا يُؤْمِنُوْنَ	بِاللّٰهِ
अल्लाह	ख़ूब इल्म वाला है	बहुत हिक्मत वाला है	जंग करो	उनसे जो	नहीं वो ईमान रखते	अल्लाह पर

وَلَا	بِالْيَوْمِ الْاٰخِرِ	وَلَا	يُحَرِّمُوْنَ	مَا	حَرَّمَ	اللّٰهُ	وَرَسُوْلُهٗ
और ना	आख़िरी दिन पर	और नहीं	वो हराम समझते	जो	हराम किया	अल्लाह ने	और उसके रसूल ने

وَلَا	يَدِيْنُوْنَ	دِيْنَ	الْحَقِّ	مِنَ الَّذِيْنَ	اُوْتُوا	الْكِتٰبَ	حَتّٰى
और नहीं	वो दीन बनाते	दीन	हक़ को	उनमें से जो	दिए गए	किताब	यहां तक कि

يُعْطُوا	الْجِزْيَةَ	عَنْ يَّدٍ	وَّهُمْ	صٰغِرُوْنَ (29) ع	وَقَالَتِ	الْيَهُوْدُ
वो दे दें	जिज़्या के	हाथ से	इस हाल में कि वो	ज़लील हों	और कहा	यहूद ने

ع 4 5 10

عُزَيْرُ	ابْنُ	اللّٰهِ	وَقَالَتِ	النَّصٰرَى	الْمَسِيْحُ	ابْنُ	اللّٰهِ ؕ	ذٰلِكَ
उज़ैर	बेटे हैं	अल्लाह के	और कहा	नसारा ने	मसीह	बेटे हैं	अल्लाह के	ये

قَوْلُهُمْ	بِاَفْوَاهِهِمْ ۚ	يُضَاهِـُٔوْنَ	قَوْلَ	الَّذِيْنَ	كَفَرُوْا
बात है उनकी	उनके मुंहों से	वो नक़ल करते हैं	बात	उनकी जिन्होंने	कुफ़्र किया

مِنْ قَبْلُ ؕ	قٰتَلَهُمُ	اللّٰهُ ۚ	اَنّٰى	يُؤْفَكُوْنَ ﴿30﴾	اِتَّخَذُوْٓا	اَحْبَارَهُمْ
इस से पहले	हलाक करे उन्हें	अल्लाह	कहां से	वो फेरे जाते हैं	उन्होंने बना लिया	अपने उलमा को

وَرُهْبَانَهُمْ	اَرْبَابًا	مِّنْ دُوْنِ	اللّٰهِ	وَالْمَسِيْحَ ابْنَ مَرْيَمَ ۚ	وَمَآ
और अपने राहिबों को	(मुख़्तलिफ़) रब	सिवाय	अल्लाह के	और मसीह इब्ने मरयम को	हालांकि नहीं

اُمِرُوْٓا	اِلَّا	لِيَعْبُدُوْٓا	اِلٰهًا	وَّاحِدًا ۚ	لَآ	اِلٰهَ	اِلَّا	هُوَ ؕ
वो हुक्म दिए गए	मगर	ये कि वो इबादत करें	इलाह की	एक ही	नहीं	कोई इलाह (बरहक़)	मगर	वो ही

سُبْحٰنَهٗ	عَمَّا	يُشْرِكُوْنَ ﴿31﴾	يُرِيْدُوْنَ	اَنْ	يُّطْفِـُٔوْا	نُوْرَ	اللّٰهِ
पाक है वो	उससे जो	वो शरीक ठहराते हैं	वो चाहते हैं	कि	वो बुझा दें	नूर	अल्लाह का

بِاَفْوَاهِهِمْ	وَيَاْبَى	اللّٰهُ	اِلَّآ	اَنْ	يُّتِمَّ	نُوْرَهٗ	وَلَوْ	كَرِهَ
अपने मुंहों से	और इंकार करता है	अल्लाह	मगर	ये कि	वो पूरा करे	अपने नूर को	और अगरचे	नापसंद करें

الْكٰفِرُوْنَ ﴿32﴾	هُوَ	الَّذِيْٓ	اَرْسَلَ	رَسُوْلَهٗ	بِالْهُدٰى	وَدِيْنِ	الْحَقِّ
काफ़िर	वो ही है	जिसने	भेजा	अपने रसूल को	साथ हिदायत	और दीने	हक़ के

لِيُظْهِرَهٗ	عَلَى الدِّيْنِ	كُلِّهٖ ۙ	وَلَوْ	كَرِهَ	الْمُشْرِكُوْنَ ﴿33﴾	يٰٓاَيُّهَا
ताकि वो ग़ालिब कर दे उसे	दीन पर	सब के सब	और अगरचे	नापसंद करें	मुशरिक	ऐ

الَّذِيْنَ	اٰمَنُوْٓا	اِنَّ	كَثِيْرًا	مِّنَ الْاَحْبَارِ	وَالرُّهْبَانِ	لَيَاْكُلُوْنَ
लोगो जो	ईमान लाए हो	बेशक	बहुत से	उलमा में से	और राहिबों में से	अलबत्ता खाते हैं

النصف

اَمْوَالَ	النَّاسِ	بِالْبَاطِلِ	وَيَصُدُّوْنَ	عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ	وَالَّذِيْنَ
माल	लोगों के	नाहक़	और वो रोकते हैं	अल्लाह के रास्ते से	और वो जो

يَكْنِزُوْنَ	الذَّهَبَ	وَالْفِضَّةَ	وَلَا	يُنْفِقُوْنَهَا	فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۙ
जमा करते हैं	सोना	और चांदी	और नहीं	वो ख़र्च करते उसे	अल्लाह के रास्ते में

فَبَشِّرْهُمْ	بِعَذَابٍ	اَلِيْمٍ ﴿34﴾ ۙ	يَّوْمَ	يُحْمٰى	عَلَيْهَا	فِيْ نَارِ
पस ख़ुशख़बरी दे दीजिए उन्हें	अज़ाब	दर्दनाक की	जिस दिन	तपाया जाएगा	उस (माल) को	आग में

جَهَنَّمَ	فَتُكْوٰى	بِهَا	جِبَاهُهُمْ	وَجُنُوْبُهُمْ	وَظُهُوْرُهُمْ ؕ
जहन्नम की	फिर दाग़ी जाएंगी	साथ उसके	पेशानियां उनकी	और पहलू उनके	और पुश्तें उनकी

هٰذَا	مَا	كَنَزْتُمْ	لِاَنْفُسِكُمْ	فَذُوْقُوْا	مَا	كُنْتُمْ	تَكْنِزُوْنَ ﴿35﴾
ये है	जो	जमा किया तुमने	अपने नफ़्सों के लिए	पस मज़ा चखो	जो	थे तुम	जमा करते

اِنَّ	عِدَّةَ	الشُّهُوْرِ	عِنْدَ اللّٰهِ	اثْنَا عَشَرَ	شَهْرًا	فِيْ كِتٰبِ اللّٰهِ
बेशक	गिनती	महीनों की	अल्लाह के नज़दीक	बारह	महीने है	अल्लाह की किताब में

يَوْمَ	خَلَقَ	السَّمٰوٰتِ	وَالْاَرْضَ	مِنْهَآ	اَرْبَعَةٌ	حُرُمٌ ؕ	ذٰلِكَ
जिस दिन	उसने पैदा किया	आसमानों	और ज़मीन को	उनमें से	चार	हुरमत वाले हैं	ये है

الدِّيْنُ	الْقَيِّمُ ۙ۬	فَلَا	تَظْلِمُوْا	فِيْهِنَّ	اَنْفُسَكُمْ	وَقَاتِلُوا
दीन	दुरुस्त	पस ना	तुम ज़ुल्म करो	इनमें	अपने नफ़्सों पर	और जंग करो

الْمُشْرِكِيْنَ	كَآفَّةً	كَمَا	يُقَاتِلُوْنَكُمْ	كَآفَّةً ؕ	وَاعْلَمُوْٓا	اَنَّ
मुशरिकीन से	इकट्ठे	जैसा कि	वो जंग करते हैं तुमसे	इकट्ठे	और जान लो	बेशक

اللّٰهَ	مَعَ	الْمُتَّقِيْنَ ﴿36﴾	اِنَّمَا	النَّسِيْٓءُ	زِيَادَةٌ	فِي الْكُفْرِ
अल्लाह	साथ है	मुत्तक़ी लोगों के	बेशक	महीनों को आगे-पीछे करना	ज़्यादती है	कुफ़्र में

يُضَلُّ	بِهِ	الَّذِيْنَ	كَفَرُوْا	يُحِلُّوْنَهٗ	عَامًا	وَّيُحَرِّمُوْنَهٗ
गुमराह किए जाते हैं	साथ इसके	वो जिन्होंने	कुफ़्र किया	वो हलाल करते हैं उसे	एक साल	और वो हराम करते हैं उसे

عَامًا	لِّيُوَاطِـُٔوْا	عِدَّةَ	مَا	حَرَّمَ	اللّٰهُ	فَيُحِلُّوْا	مَا
एक साल	ताकि वो दुरुस्त कर लें	गिनती	उनकी जो	हराम ठहराए	अल्लाह ने	पस वो हलाल करते हैं	जो

حَرَّمَ	اللّٰهُ ط	زُيِّنَ	لَهُمْ	سُوْٓءُ	اَعْمَالِهِمْ ط	وَاللّٰهُ
हराम किया	अल्लाह ने	मुज़य्यन कर दिए गए	उनके लिए	बुरे	आमाल उनके	और अल्लाह

ع 5 8 11

لَا يَهْدِي	الْقَوْمَ	الْكٰفِرِيْنَ ﴿37﴾ ع	يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ	اٰمَنُوْا	مَا	لَكُمْ	اِذَا
नहीं हिदायत देता	उन लोगों को	जो काफ़िर हैं	ऐ लोगो जो	ईमान लाए हो	क्या है	तुम्हें	जब

قِيْلَ	لَكُمُ	انْفِرُوْا	فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ	اثَّاقَلْتُمْ	اِلَى الْاَرْضِ ط	اَرَضِيْتُمْ
कहा जाता है	तुमसे	निकलो	अल्लाह के रास्ते में	बोझल हो जाते हो तुम	तरफ़ ज़मीन के	क्या राज़ी हो गए तुम

بِالْحَيٰوةِ	الدُّنْيَا	مِنَ الْاٰخِرَةِ ج	فَمَا	مَتَاعُ	الْحَيٰوةِ	الدُّنْيَا
ज़िंदगी पर	दुनिया की	आख़िरत के (मुक़ाबले में)	तो नहीं	सामान	ज़िंदगी का	दुनिया की

فِي الْاٰخِرَةِ	اِلَّا	قَلِيْلٌ ﴿38﴾	اِلَّا	تَنْفِرُوْا	يُعَذِّبْكُمْ	عَذَابًا
आख़िरत के (मुक़ाबले में)	मगर	बहुत थोड़ा	अगर नहीं	तुम निकलोगे	वो अज़ाब देगा तुम्हें	अज़ाब

اَلِيْمًا ۙ	وَّيَسْتَبْدِلْ	قَوْمًا	غَيْرَكُمْ	وَلَا	تَضُرُّوْهُ	شَيْـًٔا ط
दर्दनाक	और वो बदल देगा	कोई क़ौम	तुम्हारे इलावा	और नहीं	तुम ज़रर पहुंचा सकते उसे	कुछ भी

وَاللّٰهُ	عَلٰى	كُلِّ	شَيْءٍ	قَدِيْرٌ ﴿39﴾	اِلَّا	تَنْصُرُوْهُ	فَقَدْ	نَصَرَهُ
और अल्लाह	ऊपर	हर	चीज़ के	ख़ूब क़ुदरत रखने वाला है	अगर नहीं	तुम मदद करोगे उसकी	तो तहक़ीक़	मदद की उसकी

اللّٰهُ	اِذْ	اَخْرَجَهُ	الَّذِيْنَ	كَفَرُوْا	ثَانِيَ	اثْنَيْنِ	اِذْ هُمَا
अल्लाह ने	जब	निकाला उसे	उन लोगों ने जिन्होंने	कुफ़्र किया	वो दूसरा (था)	दो में	जब वो दोनों

فِي الْغَارِ	إِذْ	يَقُولُ	لِصَاحِبِهِ	لَا تَحْزَنْ	إِنَّ	اللَّهَ	مَعَنَا ج
ग़ार में थे	जब	वो कह रहा था	अपने साथी से	ना तुम ग़म करो	बेशक	अल्लाह	हमारे साथ है

فَأَنْزَلَ	اللَّهُ	سَكِينَتَهُ	عَلَيْهِ	وَأَيَّدَهُ	بِجُنُودٍ	لَمْ	تَرَوْهَا
तो उतारी	अल्लाह ने	सकीनत अपनी	उस पर	और उसने ताईद की उसकी	ऐसे लश्करों से	नहीं	तुमने देखा उन्हें

وَجَعَلَ	كَلِمَةَ	الَّذِينَ	كَفَرُوا	السُّفْلَىٰ ط	وَكَلِمَةُ	اللَّهِ	هِيَ
और कर दिया	बात को	उनकी जिन्होंने	कुफ़्र किया	पस्त	और बात	अल्लाह की	वो ही

الْعُلْيَا ط	وَاللَّهُ	عَزِيزٌ	حَكِيمٌ (40)	انْفِرُوا	خِفَافًا	وَثِقَالًا
बुलंद है	और है अल्लाह	बहुत ज़बरदस्त	ख़ूब हिक्मत वाला	निकलो	हल्के	और बोझल

وَجَاهِدُوا	بِأَمْوَالِكُمْ	وَأَنْفُسِكُمْ	فِي سَبِيلِ اللَّهِ ط	ذَٰلِكُمْ	خَيْرٌ
और जिहाद करो	साथ अपने मालों	और अपने नफ़्सों के	अल्लाह के रास्ते में	यह बात	बेहतर है

لَكُمْ	إِنْ	كُنْتُمْ	تَعْلَمُونَ (41)	لَوْ	كَانَ	عَرَضًا	قَرِيبًا	وَسَفَرًا
तुम्हारे लिए	अगर	हो तुम	तुम जानते	अगर	होता	सामान	क़रीब का	और सफ़र

قَاصِدًا	لَاتَّبَعُوكَ	وَلَٰكِنْ	بَعُدَتْ	عَلَيْهِمُ	الشُّقَّةُ ط
दर्मियाना	अलबत्ता वो पैरवी करते आपकी	और लेकिन	दूर हो गई	उन पर	मुसाफ़त

وَسَيَحْلِفُونَ	بِاللَّهِ	لَوِ	اسْتَطَعْنَا	لَخَرَجْنَا	مَعَكُمْ ج	يُهْلِكُونَ
और अनक़रीब वो क़समें खाऐंगे	अल्लाह की	अगर	इस्तिताअत रखते हम	अलबत्ता निकलते हम	साथ तुम्हारे	वो हलाक कर रहे हैं

ع 6 5 12

أَنْفُسَهُمْ ج	وَاللَّهُ	يَعْلَمُ	إِنَّهُمْ	لَكَاذِبُونَ (42) ع	عَفَا	اللَّهُ	عَنْكَ ج
अपने नफ़्सों को	और अल्लाह	जानता है	बेशक वो	अलबत्ता झूठे हैं	माफ़ कर दिया	अल्लाह ने	आपको

لِمَ	أَذِنْتَ	لَهُمْ	حَتَّىٰ	يَتَبَيَّنَ	لَكَ	الَّذِينَ	صَدَقُوا
क्यों	इजाज़त दी आपने	उन्हें	यहां तक कि	ज़ाहिर हो जाते	आपके लिए	वो जिन्होंने	सच कहा

وَتَعْلَمَ	الْكٰذِبِيْنَ ﴿43﴾	لَا يَسْتَاْذِنُكَ	الَّذِيْنَ	يُؤْمِنُوْنَ	بِاللّٰهِ
और आप जान लेते	झूठों को	नहीं इजाज़त मांगते आपसे	वो जो	ईमान लाते हैं	अल्लाह पर

وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ	اَنْ	يُّجَاهِدُوْا	بِاَمْوَالِهِمْ	وَاَنْفُسِهِمْ ؕ	وَاللّٰهُ
और आख़िरी दिन पर	कि	वो जिहाद करें	साथ अपने मालों	और अपनी जानों के	और अल्लाह

عَلِيْمٌۢ	بِالْمُتَّقِيْنَ ﴿44﴾	اِنَّمَا	يَسْتَاْذِنُكَ	الَّذِيْنَ	لَا يُؤْمِنُوْنَ	بِاللّٰهِ
ख़ूब जानने वाला है	मुत्तक़ी लोगों को	बेशक	इजाज़त मांगते हैं आपसे	वो जो	नहीं वो ईमान रखते	अल्लाह पर

وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ	وَارْتَابَتْ	قُلُوْبُهُمْ	فَهُمْ	فِيْ رَيْبِهِمْ	يَتَرَدَّدُوْنَ ﴿45﴾	
और आख़िरी दिन पर	और शक करते हैं	दिल उनके	पस वो	अपने शक में	मुतरद्दिद/हैरान हैं	

وَلَوْ	اَرَادُوا	الْخُرُوْجَ	لَاَعَدُّوْا	لَهٗ	عُدَّةً	وَّلٰكِنْ	كَرِهَ
और अगर	वो इरादा करते	निकलने का	ज़रूर वो तैयार करते	उसके लिए	साज़ो सामान	और लेकिन	नापसंद किया

اللّٰهُ	انْۢبِعَاثَهُمْ	فَثَبَّطَهُمْ	وَقِيْلَ	اقْعُدُوْا	مَعَ الْقٰعِدِيْنَ ﴿46﴾	
अल्लाह ने	उठना इनका	तो उसने रोक दिया इन्हें	और कहा गया	बैठ जाओ	साथ बैठने वालों के	

لَوْ	خَرَجُوْا	فِيْكُمْ	مَّا	زَادُوْكُمْ	اِلَّا	خَبَالًا	وَّلَاْ اَوْضَعُوْا
अगर	वो निकलते	तुम में	ना	वो ज़्यादा करते तुम्हें	मगर	ख़राबी में	और अलबत्ता वो (घोड़े) दौड़ाते

خِلٰلَكُمْ	يَبْغُوْنَكُمُ	الْفِتْنَةَ ۚ	وَفِيْكُمْ	سَمّٰعُوْنَ	لَهُمْ ؕ
दर्मियान तुम्हारे	वो तलाश में रहते तुम में	फ़ितने की	और तुम में	सुनने वाले (जासूस) हैं	उनके लिए

وَاللّٰهُ	عَلِيْمٌۢ	بِالظّٰلِمِيْنَ ﴿47﴾	لَقَدِ	ابْتَغَوُا	الْفِتْنَةَ	مِنْ قَبْلُ
और अल्लाह	ख़ूब जानने वाला है	ज़ालिमों को	अलबत्ता तहक़ीक़	उन्होंने (डालना) चाहा	फ़ितना	इससे पहले

وَقَلَّبُوْا	لَكَ	الْاُمُوْرَ	حَتّٰى	جَآءَ	الْحَقُّ	وَظَهَرَ	اَمْرُ
और उलट-पुलट किए	आपके लिए	मामलात	यहां तक कि	आ गया	हक़	और ज़ाहिर हो गया	हुक्म

اللّٰهِ	وَهُمْ	كٰرِهُوْنَ ﴿48﴾	وَمِنْهُمْ	مَّنْ	يَّقُوْلُ	ائْذَنْ	لِّيْ
अल्लाह का	जबकि वो	नापसंद करने वाले थे	और उनमें से कोई है	जो	कहता है	इजाज़त दीजिए	मुझे

وَلَا	تَفْتِنِّيْ ؕ	اَلَا	فِي الْفِتْنَةِ	سَقَطُوْا ؕ	وَاِنَّ	جَهَنَّمَ	لَمُحِيْطَةٌۢ
और ना	आप फ़ितने में डालिए मुझे	ख़बरदार	फ़ितने में तो	वो पड़ चुके हैं	और बेशक	जहन्नम	अलबत्ता घेरने वाली है

بِالْكٰفِرِيْنَ ﴿49﴾	اِنْ	تُصِبْكَ	حَسَنَةٌ	تَسُؤْهُمْ ۚ	وَاِنْ	تُصِبْكَ
काफ़िरों को	अगर	पहुंचती है आपको	कोई भलाई	वो बुरी लगती है उन्हें	और अगर	पहुंचती है आपको

مُصِيْبَةٌ	يَّقُوْلُوْا	قَدْ	اَخَذْنَاۤ	اَمْرَنَا	مِنْ قَبْلُ	وَيَتَوَلَّوْا
कोई मुसीबत	वो कहते हैं	तहक़ीक़	संभाल लिया हमने	मामला अपना	पहले से	और वो मुंह मोड़ जाते हैं

وَّهُمْ	فَرِحُوْنَ ﴿50﴾	قُلْ	لَّنْ	يُّصِيْبَنَاۤ	اِلَّا	مَا	كَتَبَ
इस हाल में कि वो	ख़ुश होने वाले हैं	कह दीजिए	हरगिज़ नहीं	पहुचेगा हमें	मगर (वही)	जो	लिख दिया

اللّٰهُ	لَنَا ۚ	هُوَ	مَوْلٰىنَا ۚ	وَعَلَى اللّٰهِ	فَلْيَتَوَكَّلِ	الْمُؤْمِنُوْنَ ﴿51﴾
अल्लाह ने	हमारे लिए	वो	मौला है हमारा	और अल्लाह ही पर	पस चाहिए कि तवक्कल करें	ईमान लाने वाले

قُلْ	هَلْ	تَرَبَّصُوْنَ	بِنَاۤ	اِلَّاۤ	اِحْدَى	الْحُسْنَيَيْنِ ؕ	وَنَحْنُ
कह दीजिए	नहीं	तुम इंतिज़ार करते	हमारे बारे में	मगर	एक का	दो भलाईयों में से	और हम

نَتَرَبَّصُ	بِكُمْ	اَنْ	يُّصِيْبَكُمُ	اللّٰهُ	بِعَذَابٍ	مِّنْ عِنْدِهٖۤ	اَوْ
हम इंतिज़ार करते हैं	तुम्हारे बारे में	कि	पहुंचाए तुम्हें	अल्लाह	कोई अज़ाब	अपने पास से	या

بِاَيْدِيْنَا ۖ	فَتَرَبَّصُوْۤا	اِنَّا	مَعَكُمْ	مُّتَرَبِّصُوْنَ ﴿52﴾	قُلْ	اَنْفِقُوْا
हमारे हाथों से	पस तुम इंतिज़ार करो	बेशक हम	साथ तुम्हारे	इंतिज़ार करने वाले हैं	कह दीजिए	ख़र्च करो

طَوْعًا	اَوْ	كَرْهًا	لَّنْ	يُّتَقَبَّلَ	مِنْكُمْ ؕ	اِنَّكُمْ	كُنْتُمْ	قَوْمًا
ख़ुशी से	या	ना ख़ुशी से	हरगिज़ नहीं	वो क़ुबूल किया जाएगा	तुमसे	बेशक तुम	हो तुम	लोग

فٰسِقِيْنَ ﴿53﴾	وَمَا	مَنَعَهُمْ	اَنْ	تُقْبَلَ	مِنْهُمْ	نَفَقٰتُهُمْ
नाफ़रमान	और नहीं	मानेअ हुआ उनके	कि	क़ुबूल किए जाऐं	उनसे	सदक़ात उनके

اِلَّآ	اَنَّهُمْ	كَفَرُوْا	بِاللّٰهِ	وَبِرَسُوْلِهٖ	وَلَا	يَاْتُوْنَ	الصَّلٰوةَ
मगर	ये कि वो	उन्होने कुफ़्र किया	साथ अल्लाह के	और साथ उसके रसूल के	और नहीं	वो आते	नमाज़ को

اِلَّا	وَهُمْ	كُسَالٰى	وَلَا	يُنْفِقُوْنَ	اِلَّا	وَهُمْ	كٰرِهُوْنَ ﴿54﴾
मगर	इस हाल में कि वो	सुस्त होते हैं	और नहीं	वो ख़र्च करते	मगर	इस हाल में कि वो	नापसंद करने वाले हैं

فَلَا	تُعْجِبْكَ	اَمْوَالُهُمْ	وَلَآ	اَوْلَادُهُمْ ؕ	اِنَّمَا	يُرِيْدُ	اللّٰهُ
पस ना	ताज्जुब में डालें आपको	माल उनके	और ना	औलाद उनकी	बेशक	चाहता है	अल्लाह

لِيُعَذِّبَهُمْ	بِهَا	فِى الْحَيٰوةِ	الدُّنْيَا	وَتَزْهَقَ	اَنْفُسُهُمْ	وَهُمْ
कि वो अज़ाब दे उन्हें	साथ इनके	ज़िंदगी में	दुनिया की	और निकलें	जानें उनकी	इस हाल में कि वो

كٰفِرُوْنَ ﴿55﴾	وَيَحْلِفُوْنَ	بِاللّٰهِ	اِنَّهُمْ	لَمِنْكُمْ ؕ	وَمَا	هُمْ
काफ़िर हों	और वो क़समें खाते हैं	अल्लाह की	बेशक वो	अलबत्ता तुम में से हैं	हालांकि नहीं	वो

مِّنْكُمْ	وَلٰكِنَّهُمْ	قَوْمٌ	يَّفْرَقُوْنَ ﴿56﴾	لَوْ	يَجِدُوْنَ	مَلْجَاً	اَوْ
तुम में से	और लेकिन वो	ऐसे लोग हैं	जो डरते हैं	अगर	वो पाऐं	कोई जाए पनाह	या

مَغٰرٰتٍ	اَوْ	مُدَّخَلًا	لَّوَلَّوْا	اِلَيْهِ	وَهُمْ	يَجْمَحُوْنَ ﴿57﴾
कोई ग़ार	या	कोई घुस बैठने की जगह	अलबत्ता वो मुड़ कर भाग जाऐं	तरफ़ उसके	इस हाल में कि वो	वो सरपट दौड़ते हैं

وَمِنْهُمْ	مَّنْ	يَّلْمِزُكَ	فِى الصَّدَقٰتِ ۚ	فَاِنْ	اُعْطُوْا	مِنْهَا
और कुछ उनमें से हैं	जो	इल्ज़ाम लगाते हैं आप पर	सदक़ात के बारे में	फिर अगर	वो दिए जाऐं	उनमें से

رَضُوْا	وَاِنْ	لَّمْ	يُعْطَوْا	مِنْهَآ	اِذَا	هُمْ	يَسْخَطُوْنَ ﴿58﴾	وَلَوْ
वो राज़ी हो जाते हैं	और अगर	ना	वो दिए जाऐं	उनमें से	तब	वो	नाराज़ हो जाते हैं	और काश

اَنَّهُمْ	رَضُوْا	مَآ	اٰتٰىهُمُ	اللّٰهُ	وَرَسُوْلُهٗٓ	وَقَالُوْا	حَسْبُنَا
ये कि वो	वो राज़ी हो जाते	उस पर जो	दिया उन्हें	अल्लाह ने	और उसके रसूल ने	और वो कहते	काफ़ी है हमें

اللّٰهُ	سَيُؤْتِيْنَا	اللّٰهُ	مِنْ فَضْلِهٖ	وَرَسُوْلُهٗٓ	اِنَّآ	اِلَى اللّٰهِ
अल्लाह	अनक़रीब देगा हमें	अल्लाह	अपने फ़ज़्ल से	और उसका रसूल(भी)	बेशक हम	तरफ़ अल्लाह के

رٰغِبُوْنَ ﴿59﴾ ع	اِنَّمَا	الصَّدَقٰتُ	لِلْفُقَرَآءِ	وَالْمَسٰكِيْنِ	وَالْعٰمِلِيْنَ	ع 7 17 13
रग़बत करने वाले हैं	बेशक	सदक़ात तो	फ़ुक़रा के लिए हैं	और मिस्कीनों के लिए	और जो काम करने वाले हैं	

عَلَيْهَا	وَالْمُؤَلَّفَةِ	قُلُوْبُهُمْ	وَفِي الرِّقَابِ	وَالْغٰرِمِيْنَ
उन पर	और उल्फ़त दिलाए गए	दिल जिनके	और गर्दनों (के आज़ाद) करने में	और क़र्ज़दारों (के लिए)

وَفِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ	وَابْنِ السَّبِيْلِ ؕ	فَرِيْضَةً	مِّنَ اللّٰهِ ؕ	وَاللّٰهُ	عَلِيْمٌ
और अल्लाह के रास्ते में	और मुसाफ़िर/राहगीर (के लिए)	फ़रीज़ा है	अल्लाह की तरफ़ से	और अल्लाह	ख़ूब इल्म वाला है

حَكِيْمٌ ﴿60﴾	وَمِنْهُمُ	الَّذِيْنَ	يُؤْذُوْنَ	النَّبِيَّ	وَيَقُوْلُوْنَ	هُوَ
ख़ूब हिक्मत वाला है	और कुछ उनमें से हैं	जो	अज़ियत देते हैं	नबी को	और वो कहते हैं	वो

اُذُنٌ ؕ	قُلْ	اُذُنُ	خَيْرٍ	لَّكُمْ	يُؤْمِنُ	بِاللّٰهِ	وَيُؤْمِنُ
कान है	कह दीजिए	कान है	भलाई का	तुम्हारे लिए	वो ईमान रखता है	अल्लाह पर	और वो एतमाद करता है

لِلْمُؤْمِنِيْنَ	وَرَحْمَةٌ	لِّلَّذِيْنَ	اٰمَنُوْا	مِنْكُمْ ؕ	وَالَّذِيْنَ	يُؤْذُوْنَ
मोमिनों पर	और रहमत है	उनके लिए जो	ईमान लाए	तुम में से	और वो जो	अज़ियत देते हैं

رَسُوْلَ اللّٰهِ	لَهُمْ	عَذَابٌ	اَلِيْمٌ ﴿61﴾	يَحْلِفُوْنَ	بِاللّٰهِ	لَكُمْ
अल्लाह के रसूल को	उनके लिए	अज़ाब है	दर्दनाक	वो क़समें खाते हैं	अल्लाह की	तुम्हारे लिए

لِيُرْضُوْكُمْ ۚ	وَاللّٰهُ	وَرَسُوْلُهٗٓ	اَحَقُّ	اَنْ	يُّرْضُوْهُ	اِنْ
ताकि वो राज़ी करें तुम्हें	और अल्लाह	और उसका रसूल	ज़्यादा हक़दार है	कि	वो राज़ी करें उसे	अगर

الثلثة

كَانُوْا	مُؤْمِنِيْنَ ﴿62﴾	اَلَمْ	يَعْلَمُوْٓا	اَنَّهٗ	مَنْ	يُّحَادِدِ	اللّٰهَ
हैं वो	ईमान लाने वाले	क्या नहीं	वो जानते	बेशक वो	जो	मुख़ालिफ़त करता है	अल्लाह की

وَرَسُوْلَهٗ	فَاَنَّ	لَهٗ	نَارَ	جَهَنَّمَ	خَالِدًا	فِيْهَا ؕ	ذٰلِكَ
और उसके रसूल की	तो बेशक	उसके लिए	आग है	जहन्नम की	हमेशा रहने वाला है	उसमें	ये

الْخِزْيُ	الْعَظِيْمُ ﴿63﴾	يَحْذَرُ	الْمُنٰفِقُوْنَ	اَنْ	تُنَزَّلَ	عَلَيْهِمْ	سُوْرَةٌ
रुसवाई है	बहुत बड़ी	डरते हैं	मुनाफ़िक़	कि	उतारी जाए	उन पर	कोई सूरत

تُنَبِّئُهُمْ	بِمَا	فِيْ قُلُوْبِهِمْ ؕ	قُلِ	اسْتَهْزِءُوْا ۚ	اِنَّ	اللّٰهَ	مُخْرِجٌ
जो ख़बर दे उन्हें	उसकी जो	उनके दिलों में है	कह दीजिए	मज़ाक़ उड़ा लो	बेशक	अल्लाह	ज़ाहिर करने वाला है

مَّا	تَحْذَرُوْنَ ﴿64﴾	وَلَئِنْ	سَاَلْتَهُمْ	لَيَقُوْلُنَّ	اِنَّمَا	كُنَّا	نَخُوْضُ
वो जिससे	तुम डरते हो	और अलबत्ता अगर	पूछो तुम उनसे	अलबत्ता वो ज़रूर कहेंगे	बेशक	थे हम	हम बहस करते

وَنَلْعَبُ ؕ	قُلْ	اَبِاللّٰهِ	وَاٰيٰتِهٖ	وَرَسُوْلِهٖ	كُنْتُمْ	تَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿65﴾
और हम दिल्लगी करते	कह दीजिए	क्या अल्लाह का	और उसकी आयात का	और उसके रसूल का	थे तुम	तुम मज़ाक़ उड़ाते

لَا تَعْتَذِرُوْا	قَدْ	كَفَرْتُمْ	بَعْدَ	اِيْمَانِكُمْ ؕ	اِنْ	نَّعْفُ
ना तुम उज़्र पेश करो	तहक़ीक़	कुफ़्र किया तुमने	बाद	अपने ईमान के	अगर	हम माफ़ कर दें

عَنْ طَآئِفَةٍ	مِّنْكُمْ	نُعَذِّبْ	طَآئِفَةًۢ	بِاَنَّهُمْ	كَانُوْا
एक गिरोह को	तुम में से	(तो) हम अज़ाब देंगे	एक गिरोह को	बवजह इसके कि वो	हैं वो

ع 8 7 14 وقف لازم

مُجْرِمِيْنَ ﴿66﴾ ع	اَلْمُنٰفِقُوْنَ	وَالْمُنٰفِقٰتُ	بَعْضُهُمْ	مِّنْ بَعْضٍ ۘ
मुजरिम	मुनाफ़िक़ मर्द	और मुनाफ़िक़ औरतें	बाज़ उनके	बाज़ से हैं

يَاْمُرُوْنَ	بِالْمُنْكَرِ	وَيَنْهَوْنَ	عَنِ الْمَعْرُوْفِ	وَيَقْبِضُوْنَ
वो हुक्म देते हैं	बुराई का	और वो रोकते हैं	भलाई से	और वो बंद रखते हैं

اَيْدِيَهُمْ ؕ	نَسُوا	اللّٰهَ	فَنَسِيَهُمْ ؕ	اِنَّ	الْمُنٰفِقِيْنَ	هُمُ
अपने हाथों को	वो भूल गए	अल्लाह को	तो उसने भुला दिया उन्हें	बेशक	मुनाफ़िक़ीन	वो ही

الْفٰسِقُوْنَ ﴿67﴾	وَعَدَ	اللّٰهُ	الْمُنٰفِقِيْنَ	وَالْمُنٰفِقٰتِ	وَالْكُفَّارَ	نَارَ
फ़ासिक़ / नाफ़रमान हैं	वादा किया	अल्लाह ने	मुनाफ़िक़ मर्दों से	और मुनाफ़िक़ औरतों से	और काफ़िरों से	आग का

جَهَنَّمَ	خٰلِدِيْنَ	فِيْهَا ؕ	هِيَ	حَسْبُهُمْ ۚ	وَلَعَنَهُمُ	اللّٰهُ ۚ	وَلَهُمْ
जहन्नम की	हमेशा रहने वाले हैं	उस में	वो ही	काफ़ी है उन्हें	और लानत की उन पर	अल्लाह ने	और उनके लिए

عَذَابٌ	مُّقِيْمٌ ﴿68﴾	كَالَّذِيْنَ	مِنْ قَبْلِكُمْ	كَانُوْٓا	اَشَدَّ	مِنْكُمْ
अज़ाब है	क़ायम रहने वाला	उन लोगों की तरह जो	तुमसे पहले थे	थे वो	बहुत शदीद	तुमसे

قُوَّةً	وَّاَكْثَرَ	اَمْوَالًا	وَّاَوْلَادًا ؕ	فَاسْتَمْتَعُوْا	بِخَلَاقِهِمْ
क़ुव्वत में	और ज़्यादा थे	माल में	और औलाद में	पस उन्होंने फ़ायदा उठाया	अपने हिस्से से

فَاسْتَمْتَعْتُمْ	بِخَلَاقِكُمْ	كَمَا	اسْتَمْتَعَ	الَّذِيْنَ	مِنْ قَبْلِكُمْ
पस तुमने फ़ायदा उठाया	अपने हिस्से से	जिस तरह	फ़ायदा उठाया	उन्होंने जो	तुमसे पहले थे

بِخَلَاقِهِمْ	وَخُضْتُمْ	كَالَّذِيْ	خَاضُوْا ؕ	اُولٰٓئِكَ	حَبِطَتْ	اَعْمَالُهُمْ
अपने हिस्से से	और बहस की तुमने	जिस तरह	उन्होंने बहस की	यही लोग हैं	ज़ाया हो गए	आमाल उनके

فِي الدُّنْيَا	وَالْاٰخِرَةِ ۚ	وَاُولٰٓئِكَ	هُمُ	الْخٰسِرُوْنَ ﴿69﴾	اَلَمْ	يَاْتِهِمْ
दुनिया में	और आख़िरत में	और यही लोग हैं	वो	जो ख़सारा पाने वाले हैं	क्या नहीं	आई उनके पास

نَبَاُ	الَّذِيْنَ	مِنْ قَبْلِهِمْ	قَوْمِ نُوْحٍ	وَّعَادٍ	وَّثَمُوْدَ ۙ	وَقَوْمِ اِبْرٰهِيْمَ
ख़बर	उनकी जो	इनसे पहले थे	क़ौमे नूह	और आद	और समूद	और क़ौमे इब्राहीम

وَاَصْحٰبِ مَدْيَنَ	وَالْمُؤْتَفِكٰتِ ؕ	اَتَتْهُمْ	رُسُلُهُمْ	بِالْبَيِّنٰتِ ۚ	فَمَا
और मदयन वाले	और उल्टी हुई बस्तियों वाले	आए उनके पास	रसूल उनके	साथ वाज़ेह दलाइल के	पस नहीं

كَانَ	اللّٰهُ	لِيَظْلِمَهُمْ	وَلٰكِنْ	كَانُوْٓا	اَنْفُسَهُمْ	يَظْلِمُوْنَ ﴿70﴾
है	अल्लाह	कि वो ज़ुल्म करे उन पर	और लेकिन	थे वो	अपनी ही जानों पर	वो ज़ुल्म करते

وقف لازم

وَالْمُؤْمِنُوْنَ	وَالْمُؤْمِنٰتُ	بَعْضُهُمْ	اَوْلِيَآءُ	بَعْضٍ ۘ	يَاْمُرُوْنَ
और मोमिन मर्द	और मोमिन औरतें	बाज़ उनके	दोस्त हैं	बाज़ के	वो हुक्म देते है

بِالْمَعْرُوْفِ	وَيَنْهَوْنَ	عَنِ الْمُنْكَرِ	وَيُقِيْمُوْنَ	الصَّلٰوةَ	وَيُؤْتُوْنَ
भलाई का	और वो रोकते हैं	बुराई से	और वो क़ायम करते हैं	नमाज़	और वो अदा करते हैं

الزَّكٰوةَ	وَيُطِيْعُوْنَ	اللّٰهَ	وَرَسُوْلَهٗ ؕ	اُولٰٓئِكَ	سَيَرْحَمُهُمُ	اللّٰهُ ؕ
ज़कात	और वो इताअत करते हैं	अल्लाह की	और उसके रसूल की	यही लोग हैं	ज़रूर रहम करेगा उन पर	अल्लाह

اِنَّ	اللّٰهَ	عَزِيْزٌ	حَكِيْمٌ ﴿71﴾	وَعَدَ	اللّٰهُ	الْمُؤْمِنِيْنَ	وَالْمُؤْمِنٰتِ
बेशक	अल्लाह	बहुत ज़बरदस्त है	ख़ूब हिक्मत वाला है	वादा किया	अल्लाह ने	मोमिन मर्दों से	और मोमिन औरतों से

جَنّٰتٍ	تَجْرِيْ	مِنْ تَحْتِهَا	الْاَنْهٰرُ	خٰلِدِيْنَ	فِيْهَا	وَمَسٰكِنَ
बाग़ात का	बहती हैं	उनके नीचे से	नहरें	हमेशा रहने वाले हैं	उनमें	और घर

طَيِّبَةً	فِيْ جَنّٰتِ	عَدْنٍ ؕ	وَرِضْوَانٌ	مِّنَ اللّٰهِ	اَكْبَرُ ؕ	ذٰلِكَ	هُوَ
पाकीज़ा	बाग़ात में	अदन के	और रज़ामंदी	अल्लाह की तरफ़ से	सबसे बड़ी है	यही	वो

ع 9 6 15

الْفَوْزُ	الْعَظِيْمُ ﴿72﴾ ع	يٰٓاَيُّهَا	النَّبِيُّ	جَاهِدِ	الْكُفَّارَ	وَالْمُنٰفِقِيْنَ
कामयाबी है	बहुत बड़ी	ऐ	नबी	जिहाद कीजिए	कुफ़्फ़ार	और मुनाफ़िक़ीन से

وَاغْلُظْ	عَلَيْهِمْ ؕ	وَمَاْوٰىهُمْ	جَهَنَّمُ ؕ	وَبِئْسَ	الْمَصِيْرُ ﴿73﴾
और सख़्ती कीजिऐ	उन पर	और ठिकाना उनका	जहन्नम है	और बहुत ही बुरा	ठिकाना है

يَحْلِفُوْنَ	بِاللّٰهِ	مَا	قَالُوْا ؕ	وَلَقَدْ	قَالُوْا	كَلِمَةَ	الْكُفْرِ
वो क़समें खाते हैं	अल्लाह की	नहीं	उन्होंने कहा	हालाकि अलबत्ता तहक़ीक़	उन्होंने कहा	कलमा	कुफ़्र का

وَ كَفَرُوۡا	بَعۡدَ	اِسۡلَامِهِمۡ	وَهَمُّوۡا	بِمَا	لَمۡ	يَنَالُوۡا ۚ	وَمَا
और उन्होंने कुफ़्र किया	बाद	अपने इस्लाम के	और उन्होंने इरादा किया	उसका जो	नहीं	वो पा सके	और नहीं

نَقَمُوۡٓا	اِلَّاۤ	اَنۡ	اَغۡنٰىهُمُ	اللّٰهُ	وَرَسُوۡلُهٗ	مِنۡ فَضۡلِهٖ ۚ	فَاِنۡ
उन्होंने इंतिक़ाम लिया	मगर	ये कि	ग़नी कर दिया उन्हें	अल्लाह ने	और उसके रसूल ने	अपने फ़ज़्ल से	फिर अगर

يَّتُوۡبُوۡا	يَكُ	خَيۡرًا	لَّهُمۡ ۚ	وَاِنۡ	يَّتَوَلَّوۡا	يُعَذِّبۡهُمُ	اللّٰهُ
वो तौबा कर लें	होगा	बेहतर	उनके लिए	और अगर	वो मुंह मोड़ें	अज़ाब देगा उन्हें	अल्लाह

عَذَابًا	اَلِيۡمًا ۙ	فِى الدُّنۡيَا	وَالۡاٰخِرَةِ ۚ	وَمَا	لَهُمۡ	فِى الۡاَرۡضِ
अज़ाब	दर्दनाक	दुनिया में	और आख़िरत में	और ना होगा	उनके लिए	ज़मीन में

مِنۡ وَّلِىٍّ	وَّلَا	نَصِيۡرٍ ﴿74﴾	وَمِنۡهُمۡ	مَّنۡ	عٰهَدَ	اللّٰهَ	لَئِنۡ
कोई दोस्त	और ना	कोई मददगार	और कुछ उनमें से वो हैं	जिन्होंने	अहद किया	अल्लाह से	अलबत्ता अगर

اٰتٰنَا	مِنۡ فَضۡلِهٖ	لَنَصَّدَّقَنَّ	وَلَنَكُوۡنَنَّ	مِنَ الصّٰلِحِيۡنَ ﴿75﴾
वो देगा हमें	अपने फ़ज़्ल से	अलबत्ता हम ज़रूर सदक़ा करेंगे	और अलबत्ता हम ज़रूर हो जाऐंगे	नेक लोगों में से

فَلَمَّاۤ	اٰتٰىهُمۡ	مِّنۡ فَضۡلِهٖ	بَخِلُوۡا	بِهٖ	وَتَوَلَّوۡا	وَّهُمۡ
फिर जब	उसने दिया उन्हें	अपने फ़ज़्ल से	वो बुख़्ल करने लगे	साथ उसके	और वो मुंह मोड़ गए	इस हाल में कि वो

مُّعۡرِضُوۡنَ ﴿76﴾	فَاَعۡقَبَهُمۡ	نِفَاقًا	فِىۡ قُلُوۡبِهِمۡ	اِلٰى يَوۡمِ
ऐराज़ करने वाले थे	तो उसने सज़ा दी उन्हें	निफ़ाक़ (डाल कर)	उनके दिलों में	उस दिन तक

يَلۡقَوۡنَهٗ	بِمَاۤ	اَخۡلَفُوا	اللّٰهَ	مَا	وَعَدُوۡهُ	وَبِمَا
वो मुलाक़ात करेंगे उससे	बवजह उसके जो	उन्होंने ख़िलाफ़ किया	अल्लाह से	जिसका	उन्होंने वादा किया था उससे	और बवजह उसके जो

كَانُوۡا	يَكۡذِبُوۡنَ ﴿77﴾	اَلَمۡ	يَعۡلَمُوۡٓا	اَنَّ	اللّٰهَ	يَعۡلَمُ	سِرَّهُمۡ
थे वो	वो झूठ बोलते	क्या नहीं	वो जानते	बेशक	अल्लाह	जानता है	राज़ उनके

وَنَجْوٰىهُمْ	وَاَنَّ	اللّٰهَ	عَلَّامُ	الْغُيُوْبِ ﴿78﴾ ج	اَلَّذِيْنَ	يَلْمِزُوْنَ
और सरगोशियां उनकी	और बेशक	अल्लाह	ख़ूब जानने वाला है	ग़ैबों को	वो लोग जो	वो ताना देते हैं

الْمُطَّوِّعِيْنَ	مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ	فِي الصَّدَقٰتِ	وَالَّذِيْنَ	لَا يَجِدُوْنَ
ख़ुशी से देने वालों को	मोमिनों में से	सदक़ात में	और उनको (भी) जो	नहीं वो पाते

اِلَّا	جُهْدَهُمْ	فَيَسْخَرُوْنَ	مِنْهُمْ ط	سَخِرَ	اللّٰهُ	مِنْهُمْ ز
सिवाए	अपनी मेहनत के	तो वो मज़ाक़ उड़ाते हैं	उनका	मज़ाक़ उड़ाता है	अल्लाह	उनका

وَلَهُمْ	عَذَابٌ	اَلِيْمٌ ﴿79﴾	اِسْتَغْفِرْ	لَهُمْ	اَوْ	لَا تَسْتَغْفِرْ
और उनके लिए	अज़ाब है	दर्दनाक	आप बख़्शिश मांगिए	उनके लिए	या	ना आप बख़्शिश मांगिए

لَهُمْ ط	اِنْ	تَسْتَغْفِرْ	لَهُمْ	سَبْعِيْنَ	مَرَّةً	فَلَنْ	يَّغْفِرَ	اللّٰهُ
उनके लिए	अगर	आप बख़्शिश मांगेंगे	उनके लिए	सत्तर	बार	पस हरगिज़ ना	माफ़ करेगा	अल्लाह

لَهُمْ ط	ذٰلِكَ	بِاَنَّهُمْ	كَفَرُوْا	بِاللّٰهِ	وَرَسُوْلِهٖ ط	وَاللّٰهُ
उन्हें	ये	बवजह उसके कि उन्होंने	कुफ़्र किया	अल्लाह का	और उसके रसूल का	और अल्लाह

ع 10 8 16

لَا يَهْدِي	الْقَوْمَ	الْفٰسِقِيْنَ ﴿80﴾ ع	فَرِحَ	الْمُخَلَّفُوْنَ	بِمَقْعَدِهِمْ
नहीं हिदायत देता	उन लोगों को	जो फ़ासिक़ हैं	ख़ुश हो गए	पीछे छोड़े जाने वाले	अपने बैठ रहने पर

خِلٰفَ	رَسُوْلِ اللّٰهِ	وَكَرِهُوْٓا	اَنْ	يُّجَاهِدُوْا	بِاَمْوَالِهِمْ
पीछे	अल्लाह के रसूल के	और उन्होंने नापसंद किया	कि	वो जिहाद करें	साथ अपने मालों

وَاَنْفُسِهِمْ	فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ	وَقَالُوْا	لَا تَنْفِرُوْا	فِي الْحَرِّ ط	قُلْ	نَارُ
और अपनी जानों के	अल्लाह के रास्ते में	और उन्होंने कहा	ना तुम निकलो	गर्मी में	कह दीजिए	आग

جَهَنَّمَ	اَشَدُّ	حَرًّا ط	لَوْ	كَانُوْا	يَفْقَهُوْنَ ﴿81﴾	فَلْيَضْحَكُوْا	قَلِيْلًا
जहन्नम की	ज़्यादा शदीद है	गर्मी के ऐतबार से	काश कि	होते वो	वो समझते	पस चाहिए कि वो हंसें	बहुत थोड़ा

فَاِنْ	يَكْسِبُوْنَ ﴿82﴾	كَانُوْا	بِمَا	جَزَآءًۢ	كَثِيْرًا ج	وَّلْيَبْكُوْا
फिर अगर	वो कमाई करते	थे वो	बवजह उसके जो	बदला है	बहुत ज़्यादा	और चाहिए कि वो रोऐं

لِلْخُرُوْجِ	فَاسْتَاْذَنُوْكَ	مِّنْهُمْ	اِلٰى طَآئِفَةٍ	اللّٰهُ	رَّجَعَكَ
निकलने के लिए	फिर वो इजाज़त तलब करें आपसे	उनमें से	तरफ़ एक गिरोह के	अल्लाह	वापस लौटा लाए आपको

عَدُوًّا ط	مَعِىَ	تُقَاتِلُوْا	وَّلَنْ	اَبَدًا	مَعِىَ	تَخْرُجُوْا	لَّنْ	فَقُلْ
दुश्मन से	साथ मेरे	तुम जंग करोगे	और हरगिज़ ना	कभी भी	साथ मेरे	तुम निकलोगे	हरगिज़ ना	पस कह दीजिए

مَعَ الْخٰلِفِيْنَ ﴿83﴾	فَاقْعُدُوْا	اَوَّلَ مَرَّةٍ	بِالْقُعُوْدِ	رَضِيْتُمْ	اِنَّكُمْ
साथ पीछे रहने वालों के	पस बैठे रहो	पहली बार	बैठने पर	राज़ी हो गए तुम	बेशक तुम

تَقُمْ	وَّلَا	اَبَدًا	مَّاتَ	مِّنْهُمْ	عَلٰٓى اَحَدٍ	تُصَلِّ	وَلَا
आप खड़े हों	और ना	कभी भी	(जो) मर जाए	उनमें से	किसी एक पर	आप नमाज़ पढ़िए	और ना

وَهُمْ	وَمَاتُوْا	وَرَسُوْلِهٖ	بِاللّٰهِ	كَفَرُوْا	اِنَّهُمْ	عَلٰى قَبْرِهٖ ط
इस हाल में कि वो	और वो मर गए	और उसके रसूल से	अल्लाह से	कुफ़्र किया	बेशक उन्होंने	उसकी क़ब्र पर

يُرِيْدُ	اِنَّمَا	وَاَوْلَادُهُمْ ط	اَمْوَالُهُمْ	تُعْجِبْكَ	وَلَا	فٰسِقُوْنَ ﴿84﴾
चाहता है	बेशक	और औलाद उनकी	माल उनके	ताअज्जुब में डालें आपको	और ना	फ़ासिक़ थे

وَهُمْ	اَنْفُسُهُمْ	وَتَزْهَقَ	فِى الدُّنْيَا	بِهَا	يُّعَذِّبَهُمْ	اَنْ	اللّٰهُ
इस हाल में कि वो	जानें उनकी	और निकलें	दुनिया में	साथ उनके	वो अज़ाब दे उन्हें	कि	अल्लाह

وَجَاهِدُوْا	بِاللّٰهِ	اٰمِنُوْا	اَنْ	سُوْرَةٌ	اُنْزِلَتْ	وَاِذَآ	كٰفِرُوْنَ ﴿85﴾
और जिहाद करो	अल्लाह पर	ईमान लाओ	कि	कोई सूरत	उतारी जाती है	और जब	काफ़िर हों

ذَرْنَا	وَقَالُوْا	مِنْهُمْ	اُولُوا الطَّوْلِ	اسْتَاْذَنَكَ	رَسُوْلِهٖ	مَعَ
छोड़ दीजिए हमें	और वो कहते हैं	उनमें से	वुसअत वाले	इजाज़त मांगते हैं आपसे	उसके रसूल के	साथ

نَكُنْ	مَّعَ الْقٰعِدِيْنَ ﴿86﴾	رَضُوْا	بِاَنْ	يَّكُوْنُوْا	مَعَ الْخَوَالِفِ
कि हम हो जाऐं	साथ बैठने वालों के	वो राज़ी हो गए	कि	वो हों	साथ पीछे रहने वालियों के

وَطُبِعَ	عَلٰى قُلُوْبِهِمْ	فَهُمْ	لَا يَفْقَهُوْنَ ﴿87﴾	لٰكِنِ	الرَّسُوْلُ	وَالَّذِيْنَ
और मोहर लगा दी गई	उनके दिलों पर	पस वो	नहीं वो समझते	लेकिन	रसूल	और वो लोग जो

اٰمَنُوْا	مَعَهٗ	جٰهَدُوْا	بِاَمْوَالِهِمْ	وَاَنْفُسِهِمْ ؕ	وَاُولٰٓئِكَ	لَهُمُ
ईमान लाए	साथ उसके	उन्होंने जिहाद किया	साथ अपने मालों	और अपनी जानों के	और यही लोग हैं	जिनके लिए

الْخَيْرٰتُ ۫	وَاُولٰٓئِكَ	هُمُ	الْمُفْلِحُوْنَ ﴿88﴾	اَعَدَّ	اللّٰهُ	لَهُمْ	جَنّٰتٍ
भलाईयां हैं	और यही लोग हैं	वो	जो फ़लाह पाने वाले हैं	तैयार कर रखा है	अल्लाह ने	उनके लिए	बाग़ात को

تَجْرِيْ	مِنْ تَحْتِهَا	الْاَنْهٰرُ	خٰلِدِيْنَ	فِيْهَا ؕ	ذٰلِكَ	الْفَوْزُ
बहती हैं	उनके नीचे से	नहरें	हमेशा रहने वाले हैं	उनमें	यही है	कामयाबी

ع 11 9 17

الْعَظِيْمُ ﴿89﴾ ع	وَجَآءَ	الْمُعَذِّرُوْنَ	مِنَ الْاَعْرَابِ	لِيُؤْذَنَ	لَهُمْ	
बहुत बड़ी	और आ गए	उज़र करने वाले	बदवियों/देहातियों में से	कि इजाज़त दी जाए	उन्हें	

وَقَعَدَ	الَّذِيْنَ	كَذَبُوا	اللّٰهَ	وَرَسُوْلَهٗ ؕ	سَيُصِيْبُ	الَّذِيْنَ	كَفَرُوْا
और बैठ गए	वो जिन्होंने	झूठ बोला	अल्लाह	और उसके रसूल से	अनक़रीब पहुंचेगा	उन्हें जिन्होंने	कुफ़्र किया

مِنْهُمْ	عَذَابٌ	اَلِيْمٌ ﴿90﴾	لَيْسَ	عَلَى الضُّعَفَآءِ	وَلَا	عَلَى الْمَرْضٰى
उनमें से	अज़ाब	दर्दनाक	नहीं है	ज़ईफ़ों पर	और ना	मरीज़ों पर

وَلَا	عَلَى الَّذِيْنَ	لَا يَجِدُوْنَ	مَا	يُنْفِقُوْنَ	حَرَجٌ	اِذَا	نَصَحُوْا
और ना	उन पर जो	नहीं वो पाते	वो (चीज़) जो	वो ख़र्च करें	कोई हर्ज	जब	वो ख़ैर ख़्वाही करें

لِلّٰهِ	وَرَسُوْلِهٖ ؕ	مَا	عَلَى الْمُحْسِنِيْنَ	مِنْ سَبِيْلٍ ؕ	وَاللّٰهُ
वास्ते अल्लाह के	और उसके रसूल के	नहीं है	एहसान करने वालों पर	कोई मुआख़िज़ा	और अल्लाह

غَفُوۡرٌ	رَّحِيۡمٌ ﴿91﴾ لا	وَّلَا	عَلَى الَّذِيۡنَ	اِذَا مَآ	اَتَوۡكَ
बहुत बख़्शने वाला है	बहुत रहम करने वाला है	और ना	उन पर जो	जब भी	वो आए आपके पास

لِتَحۡمِلَهُمۡ	قُلۡتَ	لَآ اَجِدُ	مَآ	اَحۡمِلُكُمۡ	عَلَيۡهِ ۖ
ताकि आप सवार करें उन्हें	कहा आपने	नहीं मैं पाता	वो जो	मैं सवार करुं तुम्हें	जिस पर

تَوَلَّوۡا	وَّاَعۡيُنُهُمۡ	تَفِيۡضُ	مِنَ الدَّمۡعِ	حَزَنًا	اَلَّا
वो पलट गए	और आंखें उनकी	बह रही थीं	आंसुओं से	ग़म की वजह से	कि नहीं

يَجِدُوۡا	مَا	يُنۡفِقُوۡنَ ﴿92﴾ ط	اِنَّمَا	السَّبِيۡلُ	عَلَى الَّذِيۡنَ
वो पाते	जो	वो ख़र्च कर सकें	बेशक	मोआख़िज़ा तो	उन पर है जो

يَسۡتَاۡذِنُوۡنَكَ	وَهُمۡ	اَغۡنِيَآءُ ۚ	رَضُوۡا	بِاَنۡ	يَّكُوۡنُوۡا
इजाज़त तलब करते हैं आपसे	हालांकि वो	ग़नी हैं	वो राज़ी होगए	कि	हों वो

مَعَ الۡخَوَالِفِ ۙ	وَطَبَعَ	اللّٰهُ	عَلٰى قُلُوۡبِهِمۡ	فَهُمۡ	لَا يَعۡلَمُوۡنَ ﴿93﴾
साथ पीछे रहने वालियों के	और मोहर लगा दी	अल्लाह ने	उनके दिलों पर	पस वो	नहीं वो जानते